सर्वियाका इतिहास.

लेखक

हिज हाइनेस महाराजाधिराज राजराना सर श्रीभवानीसिंह
बहादुर, के.सी.एस.आई., एम.आर.ए.एस., एम.
आर.एस.ए., वाइस प्रेसिडेंट शेक्सपीयर-
सोसाइटी, एस्ट्रानामिकल सोसाइटी
(कलकत्ता) इत्यादि. झालावाड़
संस्थानाधीश्वर, झालावाड़,
(राजपूताना.)

प्रकाशक
राजपूताना-हिंदी-साहित्यसभा
झालरापाटनकी ओरसे
वाडीलाल मोतीलाल शाह,
बंबई.

प्रथमाऽऽवृत्ति १०००.

संवत् १९७३-सन् १९१७. मूल्य ।=)

हिन्द और हिन्दी के

प्रेमियोंको

सादर समर्पित.

भूमिका.

जिस जातिमें एकता, स्वाधीनप्रियता और शूरवीरता कूट कूट कर भरी हो वह जाति कैसीही दशामें क्यों न पड़ जाय चिर कालतक पराधीनतामें पडी नहीं रह सकती। सर्वियाके इतिहाससे यह बात भलीभांति प्रकट होती है। सर्वियाका बारबार उत्थान और पतनका होना इस बातको भलीभांति सिद्ध करता है कि एक शूरवीर जाति सदाके लिये आक्रमण-कारियोंके हाथमें नहीं रह सकती। झालावाड़ राजपूतानाके प्रजाप्रिय विद्वान् नरेशने इस इतिहासको लिखा है और इसमें संक्षेपमें सर्वियाके वृत्तान्त दर्साये हैं। यह सरकारका वह व्याख्यान है जिसे उन्होंने झालावाड़ युद्ध व्याख्यानमें पढ़ कर सुनाया था। राजपूताना–हिन्दी–साहित्य–सभा अपने प्रथम ग्रन्थके रूपमें इस उपयोगी व्याख्यानको प्रकाशित करती है और आशा करती है कि वह भविष्यत्में उत्तमोत्तम ग्रन्थ प्रकाशित करेगी। इस इतिहासको भारतवासियोंके पढ़ने और मनन करने योग्य समझकर सभा इसे प्रकाशित करती है और इसके लेखक महाराजाधिराज राजराना सर श्रीभवानीसिंहजी बहादुर, के. सी. एस. आई., एम. आर. ए. एस., एम. आर. एस. ए., को धन्यवाद देती है, कि, उन्होंने कृपया अपना ग्रन्थ सभाको दिया और श्रीयुत पं. गिरधर शर्माजीको भी धन्यवाद देती है कि उन्होंने जहां तहां शब्दोंमें फेरफार कर इसे हिन्दी जाननेवाले सज्जनोंके लिये देवनागरीमें लिख दिया। इस पुस्तकका प्रूफ भी पंडितजीने ही देखा है इसके लिये भी सभा उनकी कृतज्ञ है।

नागदेवी, स्ट्रीट,
बम्बई। } वा. मो. शाह.

यह सभा श्रीयुत मदनमोहनजीको धन्यवाद देती है कि उन्होंने इस पुस्तककी छपाईमें दाम देकर इसका मूल्य कम करवा दिया है।

लालचन्द सेठी,

मंत्री रा. हि. सा. स.

राजपूताना–हिन्दी–साहित्य–सभा.

(झालरापाटन शहर.)

संरक्षक (पेट्रन)—हिज हाईनेस महाराजाधिराज राजराना सर भवानीसिंहजी बहादुर, के.सी.एस. आई., एम. आर. ए. एस., एम. आर. एस. ए., (इत्यादि, इत्यादि) झालावाड़ नरेश.

सभापति—रायबहादुर सेठ कस्तूरचंदजी, इंदौर.

उपसभापति—सेठ मानिकचन्दजी, झालरापाटन शहर.

संयुक्तमंत्री—सेठ लालचन्दजी व श्रीयुत मदनमोहनजी.

कोषाध्यक्ष—सेठ ओंकारजी कस्तूरचंदजी, बम्बई.

आयव्ययनिरीक्षक—सेठ नेमिचंदजी व सेठ कस्तूरचंदजी.

पुस्तकनिरीक्षक—श्रीयुत वाडीलाल मोतीलाल शाह, बम्बई; पंडित गिरिधर शर्म्माजी, झालरापाटन.

सभाका उद्देश.

हिन्दी भाषाकी हरतरहसे उन्नति व प्रचार करना, और हिन्दी भाषामें व्यापार, कलाकौशल्य, विज्ञान, इतिहास, अर्थशास्त्र, समाजनीति, वैद्यक, साहित्य, पुरातत्त्व इत्यादि विषयोंपर अच्छे २ ग्रंथ प्रकाशित करना और सस्ते मूल्यपर बेचना, यही इस सभाका उद्देश्य है ।

सभाका कार्यालय.

फ़िलहालमें सभाका कार्यालय झालरापाटन शहर (राजपूताना) में है । पत्रव्यवहार इसी स्थानपर करना चाहिये ।

सभ्यके प्रकार ।

१. रु. ५००) या ज्याद: रक़म देनेवाले सज्जन सभाके 'स्थायी सभ्य' हो सकते हैं ।

२. रु. १००) या ज्याद: रक़म देनेवाले सज्जन 'जीवन सभ्य' हो सकते हैं ।

३ वार्षिक रु. ६) देनेवाले सज्जन इस सभाके 'सभ्य' हो सकते हैं । उनको सभाकी ओरसे प्रकाशित होनेवाले प्रत्येक ग्रन्थकी प्रति भेजी जायगी ।

स्थायी ग्राहक ।

कोई भी महाशय ०–८–० प्रवेश फी जमा कराके सभाकी ओरसे प्रकाशित होते हुए सर्व ग्रन्थ ख़रीदना स्वीकारेंगे वे 'स्थायी ग्राहक' समझे जांयगे और उन्हें सर्व ग्रन्थ लागतके मूल्यपर मिलते रहेंगे ।

मंत्री, रा. हि. सा. सभा,

झालरापाटन सिटी (राजपूताना.)

झालावाड़–नरेश महाराजाऽधिराज

राजराना सर भवानीसिंह

सर्वियाका इतिहास ।

यूरपमें आजकल जो महायुद्ध हो रहा है उसने संसारमें कैसा विप्लव मचा रक्खा है ! इस महायुद्धको जारी हुए आज एक वर्षसे ज्यादाका समय हो चुका । विगत वर्षके जुलाई महीनेके अख़ीरी सप्ताहमें सारे यूरपमें ही नहीं, सारे संसारमें सब प्रकारसे अमन चैन था, सिवाय इसके कि मेक्सिकोमें कुछ बलवा हो गया था और उसका असर होना बाक़ी था । यूरपमें हर मुल्कके रहनेवाले बड़े आरामके साथ रहते थे और अपने अपने कामोंमें लगे हुए थे—अर्थात् उस वक़्त किसीको भी यह ख़ियाल नहीं था कि ऐसा घोर संग्राम होनेवाला है कि जिसमें लाखों जानें बातकी बातमें नष्ट कर दी जावेंगी ।

यह महायुद्ध उस ज़मीनपर हो रहा है जहां हज़ारों कारख़ाने, बड़ी बड़ी नई चीज़ें तैयार कर संसारकी आवश्यकताओंको पूर्ण कर रहे थे । यह वह भूमि है जहां बड़े बड़े मदरसों और यूनिवर्सिटियोंमें लोग शिक्षा पाते थे और अपने नये २ आविष्कारोंसे दुनियाको चकित कर रहे थे । ये वे मुल्क हैं जहां हज़ारों मुसाफ़िर सैर करने, और कई, बीमारियोंसे छुटकारा पानेके लिये आते थे । यह वह भूमि है जहां सैंकड़ों शहर, बहुत ख़ूब सूरत आबाद थे, जिनमें खेल—तमाशे नाटक आदि वहांके निवासियोंके मनोरंजनके लिये हुआ करते थे ।

यह वही ज़मीन हैं जहां हज़ारों मीलों तक खेती की जाती थी कि जिसकी पैदावारसे सारे देशोंको सामान मिला करते थे । यह वही भूमि है जहां हज़ारों बाग मौजूद थे कि जिनके फलफूल दुनियाभरके आदमियोंके चित्तोंको ख़ुश करते थे ।

लेकिन आज गोलेबारीके कारण इस भूमिमें न वे शहर बसे हुए हैं, न उन स्कूल—यूनिवर्सिटियोंमें विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं, न बागोंके नामोनिशान बाक़ी रहे हैं और न खेतोंका पता है —अर्थात् उन चीज़ोंमेंसे कि जो मनुष्योंको आनन्द देती थीं, एक भी बाक़ी नहीं रही है । यहां तक कि अब वह ज़मीन तक नहीं रही । यानी सारी ज़मीन गोलेबारी और सुरंगोंके कारण उलटपलट हो गई है, और यह भी नहीं कहा जा सकता कि वह ज़मीन न मालूम कब अपनी असली हालतपर आवेगी । वहांके शहर सर्वथा विध्वंस कर दिये गये, और उनकी ऐसी बरबादी कर दी गई कि उनकी बुनियाद तक खोद डाली गई । यह भयंकर दृश्य ऐसा दुखदायी है कि जिस किसीने उस ज़मीनको हरीभरी देखा है वही उसकी वीरानी देखकर यह जान सकता है कि क्या अन्तर पड़ गया ।

इस महायुद्धके प्रारम्भ होनेके ज़ाहिरी कारणको बहुत थोड़े शब्दोंमें आप लोगोंपर ज़ाहिर कर अपने असली मज़मूनको कहने लगूंगा । २८ जून १९१४ को सराजीवा शहरमें (जो बोसीनाकी राजधानी है) आस्ट्रियाहंगरीका युवराज मारा गया ।

इसपर आस्ट्रियाहंगरीने अयोग्य और बेहूदा मांगें मांगीं, फिर मार्गपर आई, किन्तु जर्मनीने उसे सलाह दी कि अब सुलह करना ठीक नहीं है। इसका परिणाम यह निकला कि आज सारा यूरप इस जंगमें फंसा हुआ है और कोई नहीं कह सकता कि यह संग्राम कब पूरा होगा।

आस्ट्रियाहंगरीके बादशाहका यह ख़ियाल है कि युवराजके मारे जानेमें सर्वियाकी साज़िश है, क्योंकि क़ातिल सर्वियाका रहनेवाला है। आप विचार सकते हैं कि यह बात सही हो तो सर्विया ही इस युद्धका मूल हो सकता है। ऐसी हालतमें मेरे ख़ियालमें सर्वियाका इतिहास आप लोगोंको अच्छी तरह जान लेना चाहिये।

किसी देशका पूरापूरा इतिहास सुनाना एक कठिन काम है और उस कामके लिये समय भी बहुत चाहिये। ख़ैर, मैं आपको वहांका थोड़ाबहुत इतिहास सुनाऊंगा। सर्वियाका इतिहास सुनानेसे पहले मैं यह बतला देना चाहता हूं कि सर्विया एक छोटीसी रियासत बाल्कन स्टेट्समेंसे है। बाल्कन स्टेट्समें सर्वियाके सिवाय, रोमानिया, बलगेरिया, मान्टैनिग्रो और अल्बानिया नामकी चार रियासतें भी हैं। सर्वियाकी रियासत यूरपके पूर्वकी ओर है जो डेन्यूब समुद्र और साऊथहंगरीसे मिली हुई है। इसके पूर्वमें बलगेरिया है और पश्चिममें अल्बानिया व मान्टीनिग्रो। उत्तरमें आस्ट्रियाहंगरी है और दक्षिणमें

ग्रीस–यानी यूनान । १८१२ ई. में इसका रक़बा १८००० मील मुरब्बा था। परन्तु तर्कीके साथ युद्ध हुए बाद इसके क़ब्ज़ेमें और भी बहुतसा मुल्क आगया । इससे आजकल इसका रक़बा ३४००० मील मुरब्बा है, और आबादी है ५०,००,०००.

सर्वियाके रहनेवाले सार्वियन्स (Serbians) कहलाते हैं। परन्तु ये लोग इस देशके प्राचीन निवासी नहीं हैं । ये लोग बाहरसे आकर रहे हैं या इन्हें वे लोग लाये हैं जो इस ज़मीनपर राज करते थे ।

पुराने इतिहासमें सबसे पहले इन लोगोंके हाल यूनानके विद्वान टोल्मीने लिखे हैं । यह उस समयका ज़िक्र है जब ये लोग बाल्कनमें आबाद नहीं हुए थे । ऐसा माल्म होता है कि ये लोग ईसाकी पहिली या दूसरी शताब्दीमें इस हिस्सेमें आकर आबाद हुए । इसके बाद छठी सदीमें ये लोग सर्विया और उसके आसपासके मुल्कोंमें आबाद हुए और इन्होंने आबाद होकर इन देशोंकी लूट–खसोट प्रारम्भ कर दी । उस समय कुस्तुन्तुनियामें ग्रीक बादशाह राज्य करते थे । उन्हें अपनेही कामोंसे फुर्सत न थी । इससे वे इनके हमलों और बेडनवानियोंको रोक न सके ।

बादशाह हीरक्लेसने (Heraclius) ६२० ई. में डेन्यूब समुद्रके इस पार इन्हें आने दिया और बसनेकी इजाज़त दी। बिलग्रेड जो आजकल सर्वियाकी राजधानी है उन दिनों इन लोगों-

के क़ब्ज़ेमें था । लेकिन उस वक़्त वह ज़्यादा कार आमद नहीं समझा गया था । यह ज़िक्र उस समयका है जिस समय इन लोगोंने अपना अधिकार बाल्कन स्टेट्सपर अच्छी तरह जमा लिया था और ग्रीक बादशाहको नाम मात्रके लिये अपना मालिक समझ रक्खा था । ये लोग स्वयं राज्यका इंतिज़ाम करते थे और इनके रिवाज़ व क़ानून बिल्कुल अलग थे जिनका क़ुस्तुन्तुनियाके बादशाहसे कुछ भी सम्बन्ध न था ।

उस ज़मानेमें चन्द सरदार थे जो मिलकर रियासतका काम अन्जाम देते थे और उन सरदारोंमेंसे एकको अपना आला अफ़सर बनाते थे लेकिन ये लोग उसकी हुकूमतमें कभी न रहे । बल्कि हर सरदार खुद मुख्तार था । इन लोगोंकी तबीयतोंमें खुद मुख्तारीका जोश था । ये लोग रईस या बादशाहकी हुकूमतमें रहना पसन्द न करते थे । और इसी वजहसे इन लोगोंका बड़ा नुक़सान हुआ । अगर हम ग़ोरसे इनके इतिहासको देखें तो साफ़ तोर पर मालूम हो जायगा कि मिलकर रहनेकी आदत न होनेसे इन लोगोंको क्या क्या नुक़सान हुए और खुद मुख्तारीके जोशने इन्हें क्या क्या फ़ायदे पहुंचाये। ये लोग छोटी छोटी जातियोंमें बँटे हुए थे और हरेक जाति एक सरदारको अपना मालिक समझती थी । और ये सरदार एक ऐसे ऊंचे सरदारको चुन लेते थे जो वीर और सब प्रकारसे योग्य हो । और वह नाम मात्रके लिये कुस्तुन्तुनियाके बादशाहका मातहत समझा जाता था ।

यह बात सुप्रसिद्ध है कि पूर्वमें मज़हब निहायत ज़रूरी समझा जाता है । जितने मज़हब आजकल मौजूद हैं सबके सब एशियाई देशोंमें पैदा हुए हैं । अवतार और पैग़म्बर जो दुनियाको सुधारनेके लिये आये इन्हीं मुल्कोंमें पैदा होकर अन्यान्य देशोंमें अपने उपदेशोंको फैला गये हैं ।

९५० ई. में रेडोस्लाव (Radoslaw) नामका बड़ा भारी सरदार था । वह ईसाई होगया । उसके कारण सारे देशवासियोंनेभी ईसाई मज़हब स्वीकार कर लिया । यद्यपि ईसाई हो जानेके कारण इन लोगोंने शिक्षामें कुछ उन्नति की थी परन्तु लड़ाई झगड़ेका माद्दा इनमेंसे कम नहीं हुआ था । इसके थोड़ेही समय बाद इनकी बलगेरियासे लड़ाई शुरू होगई और इन लोगोंमें तभीसे शत्रुता चली आरही है जो अबतक मौजूद है । इस शत्रुताका हर ज़मानेमें एकही नतीजा होता रहा, यह दूसरी बात है कि उसका फ़ायदा किसने उठाया—अर्थात् जब कुस्तुन्तुनियामें ग्रीक बादशाह राज करते थे वे इन दोनोंको आपसमें लड़ाकर इनपर अपना अहद जमाये रहे और यही हालत कुस्तुनतुनियाके मुसलमान बादशाहोंकी भी रही । वे भी इन दोनोंको लड़ाकर अपना मतलब बनाते रहे । इन दोनों क़ौमोंमें बहुत झगड़े रहे और उसका नतीजा यह हुआ कि ये दोनो क़ौमें मुसलमान बादशाहोंके आधीन होगईं ।

इस वक़्ततक सर्वियाकी यह हालत रही कि वहांके सरदार अपनी जमाअतसे एक सरदारको चुन लेते थे और वह अफ़-

सरके तोरपर काम करता था। परन्तु इस चुनावमें प्रायः झगड़े हो जाया करते थे। इससे यह ठीक समझा गया कि आलाअफ़-सरके मरे बाद उसीका कोई निकट सम्बन्धी उच्च अधिकारी बनाया जावे।

अब मैं आप सज्जनोंको उस वक़्तका हाल सुनाना चाहता हूं जब बलगेरियामें सीनीइओम(Sinieom)अधिपति था और सर्वियामें पीटर(Peter)राज करता था। उस वक़्त पीटरने कुस्तु-न्तुनियाके बादशाहको सीनीइओम (Sinieom) के विरुद्ध मदद दी इसपर सीनीइओम (Sinieom)ने सर्वियापर फ़ौज चढ़ा दी। बलगेरियाके जनरलने पीटरको धौकेसे अपनी फ़ौजमें बुलाकर गिरफ़तार करलिया और कैद कर बलगेरियाको ले गया। वहांपर ९१७ ई. में वह किसी कातिलके हाथसे मारा गया। इसके बाद बलगेरियाके बादशाहने पौल ब्रेंकोविच (Paul Brankovich)को जो माउन्टीनियर (Mountaineer सर्वियाके पुराने स्वामी)का भेजा था, सर्वियाका अधिपति बना दिया। इसे गद्दीपर बैठाते समय बलगेरियाके बादशाहने सोचा था कि पौल ब्रेंकोविच (Paul Brankovich) हमारा अहसान मन्द रहकर हमारे हुकुमोंकी जाबेजा बिना सोचे समझे तामील करता रहेगा। परन्तु उसका ऐसा सोचना गलत निकला। पौल ब्रैंकोविचने गद्दीपर बैठनेके थोड़े अर्से बादही बलगेरियाके बादशाहको ताक़में रख दिया और खुदमुख्तार होकर अपना काम करने लगा। यह नाम लेनेको कुस्तुन्तुनियाके बादशाहका

मातहत था मगर उसको भी इसने अपना अफ़सर न माना । इस वजहसे इधर बलगेरियाका बादशाह और उधर कुस्तुन्-तुनियाका बादशाह दोनों इसके शत्रु होगये और हरतरह इसे तंग करने लगे । कहनावत चली आती है कि विपत्ति अकेली नहीं आती है। यही हालत पौल ब्रेंकोविचकी हुई । अर्थात् उसी ज़मानेमें ज़कारिया (Zucharia)जो माउन्टीनियरका पोता था इसके विरुद्ध खड़ा होगया और उसे ग्रीक्स और बलगेरियन्सने मदद दी । आख़िरकार पौल ब्रेंकोविच राज्यसे अलाहिदा कर दिया गया, और उसकी जगह ज़कारियाको गद्दीपर बिठा दिया ।

यह बात तो आसान है कि एक रईसको गद्दीसे हटाकर दूसरेको उसकी जगह दे दी जावे परन्तु उसे अपने आधीन रखना बिल्कुल दूसरी बात है । इसे गद्दीपर बिठाकर भी बल-गेरियाका बादशाह निराश हुआ, क्योंकि ज़कारिया गद्दीपर बैठतेही स्वाधीन होगया । इसने कुस्तुन्तुनियाके बादशाहके साथ मैत्री कर ली और इसको प्रमाणित करनेके लिये बलगे-रियाके चन्द जरनलोंके शिर काटकर उसकेपास भेज दिये । इसका नतीजा सर्वियाके हक़में बहुत बुरा हुआ । क्योंकि सीनिइओम (Sinieom)ने ज़कारियाको बहुत भारी हार दी और उसे जन्मभरके लिये सर्वियासे निकल दिया । इतनाही नहीं उसने सर्वियाको ऐसा लूटा कि जिसका उदाहरण इतिहासमें नहीं मिलता ।

अभी मैं कह चुका हूं कि बलगेरियावाले पौल ब्रेंकोविचको अपने यहां कैद करके ले गये थे। उसका लड़का केस्लौ (Ceslaw) भी वहीं कैद था। सीनिइओमके मरनेपर बलगेरियाकी दशा बिगड़तेही केस्लौने फौरन् अपनेको आज़ाद कर लिया और सर्वियामें आकर एक फौज तैयार कर ली।

कुस्तुन्तुनियाके बादशाद जो तरक्कियें बालकिन स्टेट्समें कर रहे थे उन्हें फिर काममें लाये—अर्थात् केस्लौको इन्होंने सर्वियाका स्वामी मान लिया और उसे बलगेरियाके विरुद्ध मदद देनेका पूरा वादा कर लिया।

इसके बाद ९५० ई. से ग्यारवीं सदीके प्रारम्भतक सर्वियाके विशेष समाचार नहीं मिलते, सिर्फ एक राजा जौन व्लाडीमीर (JohnVladimir) के हाल मिलते हैं। यद्यपि इसने भी बलगेरियाके बादशाहसे हार खाई थी परन्तु सुभाग्यसे इसने बलगेरियाके बादशाहसे मित्रता कर ली थी और उसकी लड़कीके साथ शादी भी होगई थी। इतना हो गया था परन्तु अफ़सोस है कि यह जौन व्लाडीमीर (John Vladimir) जौन व्लाडिस्लोके (John Vladislaw) हाथसे बहुत बुरी तरह मारा गया। अबतक उसका नाम अल्बानियामें सन्तके तोरपर लिया जाता है। इसके बाद केवल तीन वर्ष सर्विया बलगेरियाकी मातहतीमें रहा। फिर दोनों राज्य कुस्तुन्तुनियाके बादशाहके हाथमें आगये।

१०४० ई. में सर्विया फिर स्वतन्त्र हुआ। इस स्वतन्त्रताको दिलानेवाला स्टेफन वाइस्लो (Stephen Vaislow) है जो व्लाडीमीरके वंशमेंसे था। इसके बाद बलगेरिया और सर्विया दोनों कुस्तुन्तुनियाके बादशाहके विरुद्ध खड़े होगये और कुस्तुन्तुनियाके बादशाहको बुरी तरह हराया। १०५० ई. में मीचल वाइसल्लैविच कि जो स्टेफन वाइस्लैका लड़का था गद्दीपर बैठा और तीस साल तक बड़े अमनके साथ हुकूमत करता रहा। यह इसीके ज़मानेमें हुआ कि रोमके पोप ग्रेजोनी अष्टम (Gregony VIII) ने इसे रईसके नामसे ख़िताब किया और १ झंडा अपनी असीसके साथ इसके पास भेजा।

सर्वियाका रईस और उसकी रियाया ईसाई थे परन्तु वे ग्रीक चर्चके अनुयायी थे। पोप ग्रेजोनीका इस मिहरबानीके बर्तावसे यह मतलब था कि सर्वियाका रईस और उसकी प्रजा ग्रीक चर्चको छोड़कर रोमन केथोलिक हो जावें। लेकिन उसे इसमें सफलता न हुई। ११५९ से सर्वियाकी दशा ठीक होने लगी। इस ज़मानेमें Stephen Nimaniya स्टीफन नीमानिया रईस था। यह पहला बादशाह था जो सर्वियाके उस सारे मुल्कपर राज्य करता था जिसे समय समयपर सर्वियाके सरदारोंने जीता था। और इसीके वक़्तमें बोसानिया सर्वियामें मिलाया गया। इसने बहुतसे गिरजे बनाये और जो लोग ग्रीक चर्चके विरुद्ध थे उन्हें सजायें दीं। इसी ज़मानेमें मेन्यूअल कामनेनस (Manual Comnenas) कुस्तुन्-

तुनियामें बादशाह था कि जिसके वक़्तमें सर्वियाके बादशाहने स्वतन्त्र होना चाहा परन्तु न हो सका ।

स्टीफन नीमानिया (Stephen Nimaniya) ने कुस्तुन्तुनियाके बादशाहके विरुद्ध दो बार बग़ावत की परन्तु विफल गई । बल्कि यह स्वयं क़ैदी होकर कुस्तुन्तुनियाके बादशाहकी फ़ौजमें हाज़िर हुआ । कुस्तुन्तुनियाके बादशाहने इस वक्त बड़ी दरियादिलीसे काम लिया । इसे इस हालतमें देखकर उसने सर्वियाके सिवाय लोवी बाज़ीरका इलाक़ा वापस दिया । लेकिन जब ११८० ई. में मेन्यूअलका अन्तकाल होगया और कुस्तुन्तुनियाकी बादशाहत कमज़ोर हो पड़ी तो इसने अपना फ़ायदा उठाया और बहुत बड़ा इलाक़ा अपने राज्यमें मिला लिया । और ११८५ ई. में कर देनेसेभी इंकार कर दिया । यही क्यों, स्वतन्त्र होकर अपने आप सर्वियाके सम्राट्का पदभी ग्रहण कर लिया । कुस्तुन्तुनियाके बादशाहने सर्वियापर आक्रमण किये और इसे अपने आधीन करना चाहा परन्तु यह उसके वशमें नहीं आया आख़िरकार कुस्तुन्तुनियाके बादशाहने सन्धि करनेका सन्देश भेजा । इसका परिणाम यह हुआ कि नीमानियाके लड़केका विवाह कुस्तुन्तुनियाके बादशाहकी लड़कीके साथ होगया और सर्विया एक स्वतन्त्र साम्राज्य होगया । ११९५ ई. में इसने अपने बेटे स्टेफन(Stephen)को बादशाह बना दिया और स्वयं एकान्तवासमें रहने लगा । ५ वर्ष एका-

न्तवास किये बाद वह इस असार संसारसे चल बसा । नीमानियाका सबसे छोटा लड़का साधु होगया । यह पहला सर्वियाका आर्चबिशप मुकर्रर हुआ । इसने अपना नाम सन्त सेवा (St. Sava) रक्खा था । इसीने अपने बड़े भाई स्टेफन (Stephen) के सिरपर ताज़ रक्खा था । जिसके नामके साथ प्रथम ताजदार विशेषण लगाया था । इसी ज़मानेमें पोप तृतीय इनोसेंटने फिर यह कोशिश की कि सर्विया रोमनकेथलिक होजावे । परन्तु पहले पोपकी भांति यह भी सफल मनोरथ न हुआ । यह स्टेफन वोश बड़ाही नेक और मुंतज़िम रईस हुआ है । इससे सार्वियाको बहुत फ़ायदा पहुंचा । इसने २५ वर्षतक सर्वियामें हुकूमत की । इस समयमें अपनी इच्छासे इसने कभी तलवार नहीं उठाई । इसने बहुतसे गिरजे और उपासनागृह बनवाये और सल्तनतका भीतरी इंतिज़ाम अपने हाथमें लेकर उसे बहुत अच्छा कर दिया । इसीके ज़मानेमें रुपया इसकी तस्वीरके साथ बनाया गया । इसने बलगेरिया और कुस्तुन्तुनियाके तख़्तपर बाल्डविन (Baldwin) बैठा तो उसने सर्वियाके राजाको स्वतन्त्र मान लिया । जिसके आधीन डल्मेशिया, बोसेनिया और अन्यान्य देश थे । परन्तु बोसेनिया और डल्मेशिया इन दोनों इलाक़ोंके—जो हंगरीके थे सर्वियामें शामिल होजाने बाद सर्वियापर बड़ी भारी आफ़त आई—अर्थात् इन इलाक़ोंके सर्वियामें शामिल हो जानेसे हंगरीका बादशाह द्वितीय एन्डरू सर्वियाका सख़्त दुश्मन होगया । इस हंगरीके

बादशाहने बड़ी चाल चली और स्टेफनके छोटे लड़के वौकसे मिलकर उसे बग़ावत करनेको उभारा और उसे स्वतन्त्र बादशाह कर देनेका वादा किया । परन्तु इस समय सन्त सेवा सुलह शान्तिका देवदूत बनकर आया और उसने दोनोंमें मेल करा दिया । १२२४ ई. में स्टेफनने शान्तिपूर्वक इस संसारसे कूच किया ।

अब मैं थोड़ासा बीचका हाल छोड़ दूंगा क्योंकि इस समयमें कोई ख़ास बात नहीं हुई । अब मैं इतिहासको १२३७ ई. से शुरू करता हूं । इस ज़मानेमें चौथा स्टेफन सर्वियामें राज करता था । यह बड़ा ही बुद्धिमान था और सदा शान्तिका इच्छुक था । इसने अपने ज़मानेमें मद्रसे जारी किये और शिक्षाको उस ज़मानेके मुताबिक़ ख़ूब तरक़्क़ी दी । इसकी शादी बालडविन बादशाहकी बेटी हेलीनाके साथ हुई थी । इस हेलीनाने तालीमके मामलेमें अपने पतिको ख़ूब मदद दी । इस ज़मानेमें मांगोल लोगोंने हंगरीपर हमले करने शुरू कर दिये जिनकी वजहसे हंगरीके बादशाहने सर्वियामें आकर शरणली । परन्तु इस बातसे वे जंगली लोग चौथे स्टेफनसे बहुत नाराज़ होगये और सर्वियापर चढ़ आये । इत्तिफ़ाककी बात है कि इस आफ़तसे बचे बाद चौथे स्टेफ़नका बड़ेसे बड़ा लड़का अपने बापके विरुद्ध होगया । उसे इतनीभी धीरज न रही कि बापके बाद इस तख़्तका मालिक मैं ही बनूंगा । हंगरीके बादशाहके

बहकानेमें आकर उसने अपने बापपर हमला किया और उसे क़ैद कर लिया। १२७२ में उसका बाप क़ैदमें मरा। वह बहुत दिनोंतक राजभी न कर सका क्योंकि उसने जो अपने बापपर सख़्तियां की थीं उनका उसके दिलपर बुरा असर पड़ा। वह १२७५ में राज्यसे हाथ खींच बैठा और उसकी जगह उसका भाई, छठे स्टीफनके नामसे राजा हुआ। इसके ज़मानेमें सर्वियाकी जो उन्नति हुई वह न कभी पहले हुई और न बादही।

१२७८ ई. में जब कुस्तुन्तुनियाकी फ़ौजने बलगेरियापर हमला किया तो उसी ज़मानेमें सर्वियापर भी हमला किया गया। परन्तु छठा स्टीफन ऐसा आदमी न था कि मुक़ाबला किये बिना ही ऐसे हमले होने देता। इस समय कुस्तुन्तुनिया-का बादशाह मीचेल पालेकोलोगस (Michael Palco-logus) था। इसका यह इरादा होगया था कि दुनियामें सर्वियाका नामोनिशान भी बाक़ी न रक्खे। इसलिये बलगेरि-यासे सुलह होजाने बाद १२८२ ई. में अपना इरादा पूरा कर-नेके लिये रवाना हुआ।

मीचेल पालेकोलोगसकी बहनकी सगाई सर्वियाके राजाके साथ हो चुकी थी परन्तु शाहज़ादीको सर्वियाकी रहनसहन पसन्द न आई तो उसने शादी करनेसे इंकार कर दिया और कुस्तुन्-तुनियाके बादशाहने इस इंकारका इल्ज़ाम स्टीफनपर लगाया। इतनाही नहीं सर्वियापर चढ़नेकी तैयारियां शुरू कर दीं।

इधर सर्वियाके राजाने अपने सरदारोंको इकट्ठा कर कुस्तुन्तुनियाके बादशाहकी अयोग्य सख्तियां समझाईं। वे सब सम्मिलित होकर इसका साथ देने और कुस्तुन्तुनियाके बादशाहका मुकाबला करनेको तैयार हो गये। उधर ऐसा इत्तिफ़ाक हुआ कि मीचेल पालेकोलोगस कुस्तुन्तुनियासे फौज़ लेकर रवाना हुआ ही था कि उसका अन्तकाल होगया और अपने सारे इरादोंको अपने साथ ले गया। परन्तु सर्वियाको जीतनेकी वसीयत अपने लड़के दूसरे एंड्रोनीकेरोको कर गया। परन्तु यह लड़का बड़ाही धर्मात्मा था। इसे मुल्कके अच्छे इंतिज़ाम करने और वंशपरंपराके शत्रुओंसे बदला लेनेकी अपेक्षा मज़हबी उसूलोंपर बहस करना दिलचस्प जान पड़ता था। इन सब बातोंका यह नतीजा हुआ कि छठा स्टीफ़न अपनी चढाइयोंमें सफल मनोरथ होता रहा और मेकेडेनियाके बहुत बड़े हिस्सेका मालिक बन बैठा।

यह स्टीफ़न बहुत अर्सेतक सर्वियाका बादशाह रहा और उस अर्सेमें इसे कुस्तुन्तुनियाकी सलतनतसे कुछ भय न रहा। भाग्यकी बात देखिये कि एक समय तो वह था कुस्तुन्तुनियाका बादशाह सर्वियाका नामोनिशान मिटाना चाहता था और अब वह वक़्त आपड़ा कि वहांके बादशाहने स्टीफनसे मददकी प्रार्थना की और इसने अपनी फ़ौज इकट्ठी कर बड़ी जवांमर्दीके साथ उसकी मदद कर तुर्कोंको बुरी तरह हराया।

मैं आगे चलकर आप लोगोंको बतलाऊंगा कि ये वो तुर्क थे जिन्होंने .कुस्तुन्तुनिया, सर्विया और अन्यान्य कई यूरपके देशोंको अपने कब्जेमें करलिया था और बहुत अर्सेतक उनपर राज करते रहे। यह वाक़ा १३०१ ई. का है कि जब तुर्क यूरपपर चढ़े थे।

गहरी मित्रता होजानेके विचारसे दूसरे एंड्रोनीकेरोने अपनी सीनीओइस नामकी लड़कीको स्टीफनसे विवाह देना चाहा। परन्तु जब यह ख़बर सर्वियामें पहुंची तो वहांकी प्रजा और सरदार इसके विरुद्ध होगये। उन्होंने स्टीफनको समझाया कि यह शादी मंज़ूर न की जावे। क्योंकि .कुस्तुन्तुनियाकी शाहज़ा-दियां झगड़ेकी जड़ और आफ़तकी पुड़ियां होती हैं। परन्तु स्टीफनने—जिसकी पहिली स्त्रीका अन्तकाल होगया था—विवाह करना स्वीकार करलिया। आख़िरकार सलोनिकामें बड़ी धूम धामके साथ विवाह होगया। यह याद रहे कि वर वधूकी अवस्थामें सिर्फ ३४ वर्षका फ़रक था।

इसके बाद १३०३ ई. में स्टीफनने अपने वादेके मुआ-फ़िक एंड्रोनिकसको पूरी पूरी मदद दी और तुर्कोंको यूरपसे निकाल दिया। परन्तु कितने दिनके लिये? बारह वर्ष बाद फिर एंड्रोनिकसने स्टीफनसे मदद मांगी और इस वक़्त भी स्टीफनने उसी दिलेरीके साथ तुर्कोंसे मुठ भेड़ की और उन्हें यूरपसे निकाल दिया।

स्टीफ़न रियासतदारीके कामोंको बड़ी सफलताके साथ करता रहा । परन्तु जो बातें इसके सरदारों और प्रजाने इसे सुझाई थीं वे ही आगे आईं । अर्थात् इसकी नई रानीने चाहा कि उसका लड़का कान्स्टेन्टियन (Constantine) गद्दीपर बैठे और स्टीफ़नके बड़े लड़केका—जो पहिली रानीका था—हक़ मारा जावे । जब यह बात स्टीफ़न, उसके बड़े लड़के और अन्यान्य मनुष्योंको मालूम हुई तो स्टीफ़नके बड़े लड़केने बग़ावत की, परन्तु कुछ हत्याकाण्ड न होने पाया था कि वह लड़का अपने बापके पास हाज़िर हुआ और अपने अपराधकी माफ़ी मांगी । यह बात सीमोनिस रानीको पसन्द आई परन्तु उसने यह सोचकर कि स्टीफ़न क़ुसूरोंको माफ़ कर कहीं इसी लड़केको गादी न देदे, इस लड़केकी आंखें निकलवानेका हुक्म दे दिया और इसके बाद अपने बापके यहां क़ुस्तुन्तुनिया भेज दिया कि जहांपर वह जैलमें रक्खा गया । परन्तु सर्वियाका राज तो इसके भागमें था । यह थोड़े ही अर्सेके बाद फिर सर्वियामें आगया और लोगोंको यह देख-कर बड़ाही अचंभा हुआ कि इसकी आंखें बिल्कुल अच्छी हालतमें थीं । मामूली आदमियोंको तो यह ख़ियाल हुआ कि किसी सिद्धकी यह करामात होगी । किन्तु असल बात यह थी कि जिस आदमीको आंखें निकालनेका काम दिया गया था उसने उस नालायक़ रानीके हुक्म की तामील न की थी । ख़ैर, मलका अपने इरादेको पूरा न कर सकी । छठे स्टीफ़नका

१३२१ ई. में अन्तकाल होगया और उसकी जगह उसका बड़ा लड़का गद्दीपर बैठाया गया जिसका नाम सप्तम स्टीफ़न रक्खा गया। इसने बहुत थोड़े समय तक राज किया और इस थोड़े समयमें भी इसे हंगरी, बलगेरिया और कुस्तुनतुनियाके बादशाहोंके साथ लड़ाई झगड़ोंमें लगा रहना पड़ा। इसने एक बार हंगरीकी सेनाके मुक़ाबलेमें बड़ी अच्छी जीत पाई। इसके बाद इसने बलगेरियाके बादशाह मेकायल (Michael) को बुरी तरह हराया। यह घटना २८ जून १३२० ई. की है। मेकायलसे लड़नेका कारण यह था कि उसने अपनी स्त्रीको छोड़ दिया था। यह स्त्री स्टीफ़नकी बहन थी। यह अपमान स्टीफ़नसे सहा न गया। उसने बलगेरियाको जीत लिया। मेकायल मारा गया और उसके साथ बलगेरियाके राज्यका भी अन्त होगया। परन्तु सप्तम स्टीफ़नने उदारतासे काम लिया। उसने बलगेरियाको सर्वियामें नहीं मिलाया बल्कि अपनी बहनको रेजन्ट मुक़र्रर करके उसके लड़के अलक्षेन्द्र (Alexander) को तख़्तपर बिठा दिया।

हंगरी और बलगेरियाको जीते बाद सप्तम स्टीफ़नने क़ुस्तुन्तुनियापर चढ़ाई की और कामयाब हुआ। क़ुस्तुन्तुनियाके बादशाहने फिर वही चाल चली कि इसकी शादी अपने ख़ानदानमें करदी। और इसका नतीजा भी वही निकला कि क़ुस्तुन्तुनियाकी शाहज़ादीके लड़का पैदा हुआ और उसने

वही चालें चलनी शुरू कर दीं जो सीमोनस रानीने की थीं। मेरे विचारमें सप्तम स्टीफ़नने बड़ी ग़लती की कि यह शादी की, क्योंकि वह ऐसे झगड़ोंसे वाक़िफ़ था। उसे ऐसी भद्दी ग़लती न करना चाहिये था। यह बात मानी हुई है कि इतिहास बार बार उसी रूपमें प्रकट हुआ करता है। इस मामलेमें भी वही बात हुई कि सप्तम स्टीफ़नके विरुद्ध उसका बड़ा लड़का अष्टम स्टीफ़न मुक़ाबलेमें खड़ा होगया, और उसने सेना चढ़ा अपने बापको क़ैद करके मार डाला। यह घटना १३३६ ई. की है।

सप्तम स्टीफ़नने मरते समय सर्वियाके बादशाह और उसके ख़ानदानको दुरसीस दी थी जिसका ज़िक्र आगे चलकर किया जायगा। अष्टम स्टीफ़न सर्वियाके इतिहासमें स्टीफ़न डोशनके नामसे प्रसिद्ध है। इस डोशन (Dushan) शब्दके विषयमें विविध विचार हैं। किसीका कहना है कि यह शब्द Dusite शब्दसे निकला है। जिसका अर्थ गला घोटकर मारना है। और किसीका कहना है कि यह स्टीफ़न बड़ा ही नेक बादशाह हुआ है, इससे इसे यह पद दिया गया है जिसका अर्थ आत्मा होता है। ख़ैर, इस ख़िताबके मानोंसे हमें कुछ मतलब नहीं है। परन्तु यह बात देखनेकी है कि इसने अपने बापको क़ैद कर और गला घोंट कर मारा है। यद्यपि सर्वियाके इतिहास-लेखकोंने इसके इस जुर्मको बहुत कम करके दिखानेकी कोशिश

की है परन्तु इसका यह बेहूदा और नालायक़ काम इतिहासके पृष्ठोंपर ख़ूनके अक्षरोंसे लिखा गया है जो इतिहासके पढ़नेवालोंको साफ़ दिखाई देता है। इसके एक एक अक्षरमें बापका ख़ून टपकता है। अब मैं आप साहिबोंको इस स्टीफ़नके हाल मुफ़स्सिल तौरपर सुनाता हूं। यद्यपि इसने मेरे नज़दीक और कदाचित् आपके विचारमें भी बहुत बुरा काम किया परन्तु इसमें कोई सन्देह नहीं कि यह और—और कामोंमें बहुत होशियार और लायक़ साबित हुआ। यह बड़ीही अचम्भेकी बात है कि इतनी बुरी तबीयतका आदमी अपनेमें बहुतसे गुण भी रखता हो। इसके ज़मानेमें सर्वियाकी बड़ी तरक़्क़ी हुई। इसने इस राज्यको साम्राज्यके पदपर पहुंचा दिया। इसने देशमें शान्ति रखनेके लिए क़ानून बनाया था और सर्वियाके निवासी अबतक इसे—अपने बापका क़ातिल होनेपर भी—एक देवताके समान मनुष्य गिनते हैं। और उस समयको हसरतकी निगाहसे देखते हैं। इसके ज़मानेको याद करके जोशीले सर्वेरियन्स इस बातका विचार करते हैं कि क्या ही अच्छा हो कि सार्वियाको फिर वही ज़माना नसीब हो। डोशनकी उम्र जब उसने अपने बापको मरवा डाला था २० वर्षकी थी। यह ख़ूबसूरत और लम्बे क़दका आदमी था। शुरू ज़मानेसे ही मालूम होता था कि यह आदमियोंके बहुत बड़े गिरोहका अग्रेसर बननेके योग्य है। इसकी बहुतही छोटी अवस्था थी तब इसने सर्वियाके एक फ़ौजी टुकड़ेके साथ बल-

गेरियाकी फ़ौजपर हमला किया था और बाज़ लोगोंका तो यह भी ख़ियाल है कि बलगेरियाका बादशाह इसके हाथसे मारागया था । इसमें बहुत बड़ी ख़ूबी यह थी कि इसके साथी इससे बड़ाही प्रेम करते थे और इसके दुश्मनोंको इससे डर भी ऐसाही था । एक बार उसने अपने सरदारोंसे पूछा कि क्या आपकी रायमें ग्रीस या हंगरीपर हमला करना योग्य है । उन सब सरदारोंने एक होकर उत्तर दिया कि हे प्यारे सम्राट्! जहां कहीं तू जायगा हम तेरे पीछे हैं । क़ुस्तुन्तुनियाके इतिहास लेखकोंने इसकी जीतका हाल इसतरह लिखा है कि इसके आक्रमण आगकी वर्षाके मुआफ़िक होते थे जो अपने सामने किसी चीज़को नहीं छोड़ते थे । यह इस दर्जेक बहादुर और समझदार आदमी था कि बाज़ लोगोंका यह ख़ियाल है कि यह पुराना नेपोलियन था ।

इसके क़ब्ज़ेमें पूर्वी यूरपका बहुत बड़ा हिस्सा आगया था । इसने पहलेसे उसे अपने क़ब्ज़ेमें लानेकी न कोई तजवीज़ की थी न इरादाही ! इत्तिफ़ाक़से एक हमलेमें कामयाब हुए बाद और—और हमले किये और उनमें बराबर कामयाब होता रहा । फिर उसके ख़ियालमें यह बात भी आई कि क़ुस्तुन्तुनियाको अपनी राजधानी बनाकर वहांके बादशाहको अपना मातहत कर लेना चाहिये । इसकी बहुत बड़ी ख़्वाहिश थी कि कुछ मुल्कका हिस्सा समुद्रके किनारेपर मुझे मिल जावे और इसको

पा जानेका इसे बहुत अच्छा मौका मिला, कि जिसवक्त तुर्क कुस्तुन्तुनियापर हमले कर रहे थे, इसने कुस्तुन्तुनियाके और शहरोंपर हमला किया और मेसीडानियाको अपने कब्ज़ेमें किये बाद ऐंड्रोनिकस तृतीय (Andronicus III) को स्लोनीकामें जा घेरा। आखिरकार तीसरे ऐंड्रोनिकसने सन्धि की। इस १३४० के सन्धिपत्रसे सर्वियाका साम्राज्य बहुत बड़ा हो गया। अर्थात् डेन्यूब समुद्रसे कारेंथकी खाड़ीतक और एड्रियाटिक समुद्रसे एड्रियानोपिलतक उसका विस्तार हो गया। इतना ज्यादा मुल्क हो जानेके बाद इसका विचार पूर्वी बादशाहोंका सा होगया और इसने अपना तरीका कुस्तुन्तुनियाके बादशाहका सा बना लिया, और एक खिताब भी मुकर्रर किया जिसका नाम सेंट स्टीफन रक्का। इसे देशोंके जीतनेकी कला तो खूब मालूम थी परन्तु साम्राज्यको सुदृढ रखनेके गुर मालूम नहीं थे।

इसने सर्वियाको कमज़ोर कर देनमें बड़ी ग़लती की कि सारे देशको छोटे छोटे प्रान्तोंमें बांट दिया और हरेक प्रान्तपर एक एक सरदार मुकर्रर कर दिया। जबतक सर्वियामें ज़बर्दस्त राजा रहा ये सरदार उसके आज्ञाकारी सेवक बने रहे परन्तु जब कभी कोई कमज़ोर बादशाह तख्तपर बैठा ये अलग अलग सरदार स्वाधीन बन बैठे।

अब मैं आपको थोड़ासा हाल कुस्तुन्तुनियाका सुनाना चाहता हूं क्योंकि इस डोशनसे उसका बहुत कुछ ताल्लुक है।

१३४१ में कुस्तुन्तुनियाका बादशाह जानपेलियूगस (John Paleogus) था। वह कम उम्र था। वहांका काम जान कन्टाकूज़न (John Cantacuzene) के हाथमें था। इसने यह इरादा किया कि कुस्तुन्तुनियाका बादशाह मैं हो जाऊं परन्तु वहांपर इसका कोई सहायक न हुआ। अब इसने डोशनसे मदद पानेका विचार किया और यह उसकेपास प्रस्टीना (Pristina) में पहुंचा। उस वक्त प्रस्टीना सर्वियाकी राजधानी था। स्टीफ़नने इसकी बड़ी ख़ातिर की और अपना महमान बनाकर रक्खा। यह हाल जब मल्का एनाको मालूम हुए तो उसने स्टीफ़नको संदेश भेजा कि जिस तरह हो सके जान कन्टाकूज़नको—जो मेरे लड़केका हारिज हो रहा है—मार डाला जावे और इसकी एवज़में कुस्तुन्तुनियाकी बादशाहत बटवा ली जावे। इसके सिवाय मलकाने ज़हर भी भेजा कि मेरे जानी दुश्मनको दे दिया जावे। इतने बड़े बादशाहके क्षोभकी भी परवा न कर डोशन जान कन्टाकूज़नकी सहायता करत रहा। डोशनकी स्त्रीका नाम हलीना था अपने महमानकी जान बचानेमें कामयाब हुई। डोशन और जान कन्टाकूज़न गहरी मित्रता हो गई थी परन्तु आपसकी ग़लती भरी समझसे दोनोंके चित्तोंमें अन्तर पड़ गया। जान कन्टाकूज़न तुर्कोंसे जा मिला। इधर डोशन बलगेरियाका हामी बना और इसने १३४६ ई. में बादशाहका ख़िताब ले लिया।

आख़िर कार इस मेल और फ़सादके ये नतीजे निकले कि कन्टाकूज़न डोसनके मुक़ाबलेमें कामयाब हुआ और डोशनको मेकेडानियाका बहुत बड़ा हिस्सा वापस देना पड़ा। इधर हंगरीका बादशाह 'लूई दी ग्रेट' सर्वियापर बड़ी मुद्दतसे ख़ार खाये बैठा था और इस ताकमें था कि सर्वियाको पछाड़कर अपने दिलका बुख़ार निकाले क्योंकि सप्तम स्टीफ़नके ज़मानेमें हंगरीको ज़िक उठानी पड़ी थी। परन्तु हंगरीका बादशाह डोशनके मुक़ाबलेमें सफल मनोरथ न हुआ और इस युद्धमें उसका बहुत बड़ा नुक़सान हुआ। डोशनने जब यह देखा कि उसपर चारों ओरसे आक्रमण हो रहे हैं तब उसने सोचा कि पोपसे मिलकर कुछ मदद लेनी चाहिये। पोप इसका संदेश पाकर बहुत ख़ुश हुआ क्योंकि उसका ख़ियाल था कि सर्वियाके राजा प्रजा रोमनकेथलिक हो जांयगे। परन्तु जब डोशनको यह मालूम हुआ कि हंगरीका बादशाह फ़साद करनेको आमादा नहीं है तब उसने पोपके साथ फिर कुछ ज्यादा बातचीत न की। इससे बेचारे पोप निराश होकर बैठ गये। ये इलाके बोसानिया और जेगोनिया—जिनमें इस यूरपीय महायुद्धकी आग लगी हुई है—१३५० ई. में डोशनने अपने राज्यमें मिला लिये थे। इन बराबर होनेवाले झगड़ोंके कारण डोशनने क़ानून बनाया जो अबतक वहांपर जारी है। यह डोशन रोमनकेथलिकोंके सख़्त ख़िलाफ़ था। इसने एक क़ानून ऐसा भी बनाया था कि अगर कोई रोमनकेथलिक

पादरी दूसरे मतवालेको अपने मतका बनावेगा तो मौतकी सज़ा पावेगा । इसे व्यापार फैलानेका भी बड़ा शौक था । इसने क़ानून बनाया था कि किसी व्यापारीको राज्यमें कोई दुःख न होने पावे । इसके कारण आसपासके देशोंके व्यापारी निःशंक होकर सर्वियामें व्यापार करते थे । सारे प्रान्तोंके सरदारोंको इस बातकी सख्त़ हिदायत थी कि यदि वे किसी व्यापारीको तकलीफ़में देखें तो उनका कर्तव्य है कि उसे पूरी पूरी मदद दें । इसने यह भी क़ानून बनवाया कि अगर कोई शराब पीकर दंगा फ़साद करेगा तो ख़ूब पिटवाया जायगा और खोटा सिक्का चलानेवाला ज़िन्दा जला दिया जायगा ।

यह बादशाह बड़ा ही बुद्धिमान और होशियार हुकुमरां था साम्राज्यमें ऐसा कोई काम न था जिसपर इसकी निगाह न हो । यहांतक कि छोटे-से-छोटे कामपर भी इसकी निगाह थी बड़ोंका तो ज़िक्र ही क्या है । इन सब बातोंके सिवाय इसे तालीमका भी बड़ा ही शौक़ था । मदरसोंकी तादादमें इसने बड़ी ही तरक़्क़ी की । बाहरसे बड़े बड़े विद्वानोंको बुलाकर यह अपने यहां रखता था । इस ज़मानेमें क़ुस्तुनतुनिया की बादशाहतकी हालत लुप सी गई थी । तुर्क उसपर हमले कर रहे थे । डोशनको ख़ियाल हुआ कि क़ुस्तुनतुनियाकी बादशाहतको हड़पलेनेका यह बहुत अच्छा मौक़ा है । इसने ज़ोरावर चढ़ाई करनेकी काररवाई शुरू की और शीघ्र ही ८०००० की फ़ौज

जमाकर हमला करदिया । इत्तिफ़ाककी बात है कि क़ुस्तुन्तु-नियाकी फ़ौजका भी कुछ हिस्सा इससे आ मिला । बेचारा पेलियोगस (Paleogus) इसका मुक़ाबला न करसका परन्तु अफ़सोसकी बात है कि १८ दिसम्बर १३५६ ई. को जब यह क़ुस्तुनतुनियासे ४० मीलकी दूरीपर रह गया था एका-एक बीमार होकर मरगया । यदि यह अपने इरादेमें सफल हो गया होता तो यूरपके इतिहासमें बहुत बड़ा फ़रक आगया होता ।

इसके मरनेके बाद इसके शुभ चिन्तकोंने इसे प्रीसूंड (Prisrend) में गाड़ दिया और इसके साथ ही सर्वियाके साम्राज्यकी उन्नति और जीतें भी गड़ गईं ।

डोशन मरनेके पहले अपने अख्तियारकी सारी कोशिशें अपने राज्यको अछी हालतमें रखनेके लिये करता रहा । उसने मरनेसे पहले अपने तमाम सरदारों और योद्धाओंको बुलवाया और उनसे वादा करवाया कि मेरे मरे बाद वे मेरे लड़के पञ्चम यूरोश (Urosh) की सेवा करते रहेंगे और बड़ी ईमानदारीके साथ उसकी आज्ञाका पालन करते रहेंगे ।

परन्तु जिन्होंने इतिहास पढ़ा है वे जानते है कि ऐसे वादे कहांतक निबाहे जाते हैं । पञ्चम यूरोश उसवक्त सिर्फ़ १९ वर्षका लड़का था । यह तबीयतका कमज़ोर और शान्तिप्रिय था । इससे वे ज़ोरावर सरदार जो इसके बापके आज्ञाकारी थे इसकी

आधीनताको छोड़कर स्वाधीन हो गये। इस अवनतिका उत्तर-दायित्व बहुत करके स्टीफ़न डोशनकी ग़लतीपरभी है जो उसने सर्वियाको छोटे छोटे प्रान्तोंमें बांट देनेमें की थी।

भीतरी और बाहरी झगड़ोंके कारण सर्वियाके राज्यमें सदा उलटा पलटी होती रही। इसके ज़मानेमें बाहरी झगड़ेभी बहुत हुए थे। इसे सबसे ज्यादा नुक़सान अपनी मां और काकाके द्वारा पहुँचा। स्टीफ़न डोशनके जीते हुए देश जो अच्छी तरह सर्वियाके साथ न मिलने पाये थे सार्वियासे न्यारे हो गये। अर्थात् थोड़े ही समयमें थेसली, अल्बानिया, बल्गेरिया अलग हो गये और बिल्ग्रेड (जो मौजूदा सर्वियाकी राजधानी है) हंगरीके बादशाहने छीन लिया। स्टीफ़न टाईकोने बोसानियाको सर्वियासे जुदा करके १३७५ ई. में अपनेको सर्विया, बोसानिया और समुद्रके किनारेका बादशाह समझ लिया। इधर तुर्कोंके हमले होने लगे और उन्होंने १३६० ई. में ईडरियानोपलपर अपना स्वत्त्व जमा लिया। इसके बाद सर्विया और क़ुस्तुनतुनियाके बादशाहोंने मिलकर तुर्कोंपर हमला किया परन्तु बहुत बुरी तरह हारे, जिसका नतीजा यह हुआ कि सर्वियाके छोटे छोटे सरदार स्वतन्त्र बन बैठे। यहांतक कि इन सरदारोंमेंसे एकने इस दर्जेकी बेईमानी करनी चाही कि डोशनके लड़केको ताजसे महरूम कर दिया जावे। इस भले आदमीका नाम (Vaukacin) वोकासिन था। इसने पञ्चम यूरोस-

के साथ गहरी दोस्ती पैदा की । यद्यपि पञ्चम यूरोसके मन्त्रियोंने उसे समझा दिया था कि वह Voukacin के फंदेमें न आवे परन्तु उसके ख़ियालमें मन्त्रियोंकी सलाह न आई । आख़िर एक दिन वोकासिनने फ़ौज लाकर पांचवे यूरोसको आ घेरा और यूरोस भाग निकला । वोकासिन यूरोसकी जानका गाहक हो चुका था ईससे उसने यूरोसको मार डालनेका हुक्म दिया और उसे इस काममें सफलता हुई ।

आप ख़ियाल कीजिये कि यह दुनिया भी कैसी अजीबो ग़रीब जगह है । एक ज़माना वह था कि स्टीफ़न डोशनने सर्वियाको छोटेसे राज्यसे बड़ा भारी साम्राज्य बना दिया था और एक ज़माना यह आया कि उसीका लड़का इतना कमज़ोर और नालायक़ निकला कि जिसके पास एक चप्पाभर ज़मीन भी न रही । अर्थात् डोशनके मरनेके बाद १० वर्षके भीतरही सर्वियाकी ऐसी बड़ीभारी सलतनतके टुकडेटुकडे होगये और ऐसे लायक़ बापका बेटा इस बुरीतरहसे मारा गया । इस दुष्ट वोकासिनने ज्यादा अर्सेतक अपनी बेईमानीका कुछ फ़ायदा न उठाया क्योंकि तुर्कोंने सर्वियापर हमले करने शुरू कर दिये । इन हमलोंको सहन करनेकी ताब न लाकर बोकासिनने सर्वियाके सरदारोंको इकट्ठा किया और उनसे अपने क़ुसूरोंकी माफ़ी चाही और उन्हें तुर्कोंपर चढ़नेकी तरगीब देकर तैयार कर लिया । वोकासिन बहुत बड़ी सेना लेकर तुर्कोंसे जा भिड़ा

और उन्हें आगे बढ़नेसे रोक दिया । परन्तु मुरादलिने सर्वि-याकी फ़ौजपर रातमें छापा मारा और सारी फ़ौजका नाश कर दिया । क़रीब क़रीब सर्वियाके सारे सरदार मारे गये और जो कुछ बाक़ी रहे वे तितर—बितर होगये । वोकासिन थोड़ेसे साथियोंको लेकर भाग निकला । और इसके नोकरोंमेंसे किसीने सोनेकी जंज़ीरके लालचमें मार डाला । इस हारकी ख़बर सारे यूरपमें फैल गई और सब ईसाई राज्योंपर तुर्कोंका भय बैठ गया । इस हारका प्रभाव यहांतक पड़ा कि पोपने आमजल्सेमें अफ़सोस और दुःख प्रकट किये । इसके बाद सर्वियाके लोगोंने लाज़ार (Lazar) नामके एक सरदारको अपना राजा बनाया। यह १३७१ में गद्दीपर बैठा जो बहुत बुरा ज़माना था । इसने यह मुनासिब न समझा कि ऐसी हालतमें जब कि न फ़ौज ही पास हैं और न कोई सामान ही तुर्कोंपर चढ़ाई की जाय । यह चुपचाप मेसीडोनिया (Macedonia) का तुर्कोंके हाथमें होता देखता रहा । सार्वियाको ऐसी हालतमें देखकर हंगरीके बादशाहको इसकी मदद करना योग्य था परन्तु इसके विपरीत उसने सर्वियापर चढ़ाई करनेका यह मौक़ा ग़नीमत माना ।

१३८६ ई. में जब तुर्कोंनें सर्वियापर हमला किया और कुछ मुल्कभी छीन लिया तो लाज़ार (Lazar) ने तुर्कोंके साथ सुला कर ली और यह क़रार पाया कि सालाना खिराज देने के सिवाय एक हज़ार सिपाहीभी तुर्कोंकी सेनाके लिये देने होंगे।

आप ख़ियाल कर सकते हैं कि सर्वियाकी हालतमें कितना आश्चर्यकारी फेर पड़ गया । जब यह सब कुछ हो चुका तब इन ईसाई राज्योंकी आंखें खुलीं और वे अपनी ग़लतीपर सख़्त अफ़सोस करके तुर्कोंके मुक़ाबला करनेको तैयार हुए। यह काररवाई इन राज्योंने जो इस वक़्त की यदि कुछ समय पहले करते तो बहुत कुछ सफलता पा सकते थें । परन्तु इस एकेसे भी यह फ़ायदा अवश्य हुआ कि इन्होंने तुर्कोंको उस वक़्त हार दी जिस वक़्त अव्वल मुराद एशिया मायनरमें अपनी शक्तिकी ख़ुशियां मना रहा था । जब यह ख़बर अव्वल मुरादको पहुंची तो उसे बड़ी तकलीफ़ मालूम हुई और उसने बदला लेनेका इरादा कर लिया। वह फ़ौरन यूरपको लौट आया और बड़ी भारी सेना लेकर सर्वियापर चढ़ गया। अव्वल मुराद और ईसाई राज्योंमें जो घोर संग्राम हुआ इसके परिणाममें बाल्कि पैनिन्सला बहुत अर्सेके लिये तुर्कोंके हाथमें चला गया । यह युद्ध कोसावो (Kosavo) के मैदानमें हुआ । यह मैदान बड़ाही समतल है और इसके चारों ओर पहाड़ हैं । इसकी सूरत शकलसे जान पड़ता है कि यह मैदान बनायाही इसी कामके लिये गया है। इस जगह जो युद्ध हुआ है उसके हाल किताबों और गावोंमें मिलते हैं । इतिहासकारोंने लिखा है कि जब दोनों ओरकी सेनायें मुक़ाबलेके लिये कमर बांधकर खड़ी थीं तब यह जान पड़ता था कि यह मैदान आदमियों और घोड़ोंका समुद्र बना हुआ है । वहांपर इतने ज्यादा झंडे लगे हुए थें कि सूरज भी उनकी

ओटमें आगया था और इतने ज्यादा आदमी इकट्ठे हुए थे कि उनके बीचमें होकर एक पानीकी बूंदभी ज़मीनपर नहीं गिर सकती थी।

१५ जून १३८९ ई. को यह जंग शुरू हुआ। एक ओर अव्वल मुरादके सेनापतित्वमें तुर्कोंकी फ़ौज थी और दूसरी ओर ईसाईयोंकी सेना थी जिसका सबसे बड़ा अफ़सर सर्वियाका बादशाह लाज़ार (Lazar) था।

अव्वल मुराद कुछ हिम्मत हार गया था परन्तु उसके एक मन्त्रीने कहा कि मुझे जीतके देवदूतने स्वप्नमें आकर कहा है कि इन काफ़िरोंके मुक़ाबलेमें तुर्कोंकी जीत अवश्य होगी। मुरादके दिलपर इस बातका बड़ा प्रभाव पड़ा और वह तुरंत-ही ईसाइयोंकी सेनापर टूट पड़ा। युद्ध बड़ी तेज़ीसे होने लगा दोनों ओरके हज़ारों आदमी बातकी बातमें कट गये। परन्तु बड़े अफ़सोसकी बात है कि वक ब्रेंकोविच (Vuk Brankovich) जो सर्वियाकी बहुत बड़ी फ़ौजी टुकडीका अफ़सर था अव्वल मुरादसे मिलकर अपने मालिकको धौका देनेके लिये तैयार हो गया क्योंकि अव्वल मुरादने उसे सर्वियाका बादशाह बना देनेका क़रार कर लिया था। इस बेईमानीकी वजहसे तुर्कोंकी जीत हुई। और ऐसे वक्तमें जब कि हार और जीतका निश्चय न हुआ था वक ब्रेंकोविच अपनी १२ हज़ार सेना लेकर अलग होगया। लाज़ारने ख़ूब जी तोड़कर हमले किये और तुर्कोंके हमलोंको पीछे फेर दिये। आख़िर लाज़ारके घोड़ेने ठोकर खाई,

लाज़ार ज़मीनपर गिर गया और तुर्कोंके हाथसे मारा गया। तुर्कोंकी जीत हुई परन्तु इतना अफ़सोस रहा कि उनका नेता अव्वल मुराद इस लड़ाईमें काम आया। इस अव्वल मुरादकी मौतके बारेमें कई कहानियां प्रसिद्ध हैं। यहांपर मैं दो कहानियां प्रकट करता हूं। एक तो यह है कि लड़ाई सर करलेनेके बाद जब अव्वल मुराद खेत संभालनेको आया तो एक मजरूह सर्वने यह ज़ाहिर किया कि मैं बादशाहका मुतीह होना चाहता हूं और इस नीयतसे सलाम करनेको खड़ा हुआ। इस मजरूहने जिसका नाम मिलौस ओबीविच था अपने कपड़ोंसे एक छुरा निकाला और मुरादके सीनेमें घोंप दिया। दूसरी बात यह प्रसिद्ध है कि वक ब्रेंकोविचने तानेमें मिलौस ओबीविचको कम हिम्मत कहा, जिसके जवाबमें उसने अपनी बहादुरी दिखानेका वादा किया और एक दि प्रातःकाल वह तुर्की फ़ौजमें जा पहुंचा वहां पहुंचकर उसने बादशाहसे अर्ज़ कराई कि मैं सर्वियाकी सेनाको छोड़ आया हूं और आपकी ख़िदमतमें रहना चाहता हूं। वह भीतर बुलाया गया और उसने वहां पहुंचते ही मुरादपर हमला कर उसे मार डाला। अबतक मिलौस ओबीलिचका नाम उन मुल्कोंमें बड़ी इज़्ज़तके साथ लिया जाता है और वक ब्रेंकोविचका नाम बड़ी घृणाके साथ लिया जाता है।

मुराद मारा गया परंतु उसके मारे जानेसे कुछ फ़ायदा न हुआ क्योंकि रणभूमिमें उसकी जगह उसके लड़के बायज़ी-

दको मुक़र्रर कर दिया गया । वक ब्रेंकोविच बादशाहके हुक्मसे ज़हर देकर मार डाला गया ।

कोसावो (kosovo) के इस युद्धको बाल्कन स्टेट्सके आदमी कभी न भूले और जब कभी इन लोगोंनों तुर्कोंपर हमले किये तो वे आपसमें सदा इस युद्धको याद करते रहे । टीक युद्धके समयभी कोसावोके युद्धका हमें बदला लेना है करके हमले करते रहे ।

इस युद्धके कारण मान्टिनिग्रोके लोग अभीतक अपनी टोपी-पर शोकका चिन्ह रखते हैं । इस युद्धके बादही सर्विया का ख़ात्मा हो चुका था परंतु ७० वर्षतक तुर्कोंनें सर्वियाके बाद-शाहको राज करने दिया । यह ज़माना सर्वियाके लिये बहुत बुरा आया ।~सर्वियाके सैंकड़ों ख़ानदान सर्वियाको छोड़कर मान्टिनिग्रो और हंगरीमें जा बसे ।

बायज़ीदने इस संग्रामके बाद ज़्यादा मुल्क जीतनेकी कोशिश नहीं की क्योंकि इसकी फ़ौजने इस जंगमें बहुतस ख़्तियां उठाईं थीं । इसने लाज़रविचको जो सर्वियाके स्वर्गीय बादशाहका लड़का था इस शर्तपर सर्वियाका बादशाह रहेने दिया कि वह इसका मातहत रहे, हरसाल खिराज दे और अपनी बहन मिलवा (Milwa) को मेरे साथ विवाह दे । इस हारी हुई जातिके पास दुसरा कोई मार्ग न था सिवाय इसके कि इन सब शर्तोंको मान ले ।

इतिहाससे यह बात प्रकट होती है कि एंगोरा (Angora) की लड़ाईमें जो १४०२ ई.में तैमूरके साथ हुई थी सर्वियाका बादशाह तुर्कोंके बादशाहके साथ था, बड़ी बाहदुरीके साथ लड़ा था। इस जंगमें बायज़ीद (तुर्कोंका बादशाह) तैमूरका हाथमें गिरफ्तार हो गया।

सर्वियाको यह ख़ियाल था कि बायज़ीदके साथ मिलेवा (Milewa) की शादी होजानेसे कुछ आराम मिलेगा परंतु विरुद्ध इसके तुर्क इस बातका दावा करने लगे कि सर्विया की बादशाहत उनकी है, क्योंकि मिलेवाकी जो औलाद थी उसका सर्विया पर हक़ था। परंतु बायज़ीदके लड़कोंमें आपसमें झगड़ा-फ़साद हो रहा था इससे सर्विया और बोसानियाको कुछ अर्सेके लिये आराम मिल गया। और सर्वियाके बादशाह स्टीफ़न लार्जविचने हंगरीसे बिल्ग्रेड छीन लिया। इस समय कुस्तुनतुमियामें बहुत झगड़े फैल गये थे। स्टीफ़न लार्जविचने सुलतान प्रथम मुहम्मदको मदद दी। इसका परिणाम यह निकला कि प्रथम मुहम्मद बादशाह हो गया। इसके बदलेमें मुहम्मदने सर्वियाके वे मुल्क लौटा दिये जो सर्वियासे पहले छीन लिये गये थे और स्टीफ़नको सर्वियाका बादशाह बना दिया परंतु ख़िराज सर्वियाके ज़िम्मे रहा। १४२७ में स्टीफ़न लार्जविच निःसन्तान मर गया। परंतु मरनेसे पहले उसने जार्ज ब्रेंकोविचको अपना स्थानापन्न ठहराया। यह शख्स़ उस सर-

दारका लड़का था जिसने अव्वल मुरादके साथ कोसावोके युद्ध-में सर्वियाका साथ छोड़ दिया था। मौजूदा मुरादने इस स्थानापन्नताको अस्वीकारही नहीं किया, बल्कि उसने सर्विया पर—मिलेवाका पोता होनेके कारण—अपना हक़ बतलाया और चढ़ाई कर दी। इस चढ़ाईसे इसे ज़्यादा कामयाबी तो नहीं हुई परंतु सर्विया पूरे तोर पर इसका मुक़ाबला न कर सका। उस-ने इससे सन्धि करनेकी प्रार्थना की और इसका परिणाम यह निकला की जार्ज ब्रेंकोविचकी लड़कीकी इसके साथ शादी हो गई।

इसके बाद यह ख़ियाल था कि अब सर्विया अमनके साथ रह सकेगा; लेकिन यह सब स्वप्नसा होगया। मौजूदा मुरादका इरादा हंगरीको जीतनेका हुआ; और इसमें सफलता पानेके लिये यह बात ज़ुरूरी थी कि इसके हाथमें सर्विया हो। इस-लिये इसने सबसे पहले सर्वियापर हमला किया, और १४४० ई० में सर्विया तुर्कोंके हाथमें आगया! इसी ज़मानेमें हंगेडी जेनस् नामका एक बहादुर आदमी खड़ा होगया, जिसने बड़े जोशके साथ तुर्कोंका मुक़ाबला किया, कि तुर्कोंका ख़ियाल होने लगा कि इसमें ज़ुरूर शैतानकी रूह मौजूद है। इस बहादुरके साथ हंगरीका बादशाह भी होगया, और इनकी जीत तुर्कोंपर लगातार होने लगीं। आख़िरकार १४४४ ई० में इनमें सुलह होगई। सर्विया फिर तुर्कोंसे ख़ाली होगया, और वहींका बादशाह फिर उसपर हुकूमत करने लगा। परन्तु यह

हालत ज्यादा अर्सेतक क़ायम न रही, क्योंकि अहदनामेके हुरूफ़ पूरे तौरपर सूखनेभी न पाये थे कि हंगरीके बादशाहने उसे फाड़ फैंका, और तुर्कोंपर हमला शुरू कर दिया। जार्ज ब्रेंको-विचने इस हमलेमें हंगरीके बादशाहका साथ नहीं दिया; क्योंकि वह जानता था कि हंगरीके बादशाहकी यह कारवाई योग्य नहीं है। सन १४४४ ई० में वारनाके मुक़ामपर तुर्कोंकी जीत हुई। तुर्कोंकी इस जीतसे बिचारे ब्रेंकोविचने बड़ी तकलीफ़ उठाई; क्योंकि इन विजयी तुर्कोंने हंगडी और सर्वियामें कुछ अंतर नहीं समझा, और दोनोंके साथ एक सा सख़्तीका बर्ताव किया। इस मौक़ेपर हंगेडी जेनस् (Hungady ganos) फिर सर्वियाकी मददपर आया, और तुर्कोंको कुछ अर्सेके लिये ज्यादा सख़्ती करनेसे रोक दिया। इसके बाद मुराद सानीने क़ुस्तुन्तुनिया पर हमला करके उसे अपनी राजधानी बना लिया, और सफलताके हो जानेसे वह सर्विया-को भी अपने राज्यमें आसानीके साथ मिला सका। मुरादने जार्ज ब्रेंकोविच पर हमला कर दिया, और उसकी राजधानी सेमेन्ड्रियाको गोले मारकर पत्थर और मिट्टीका ढेर बना डाला। हंगेडी जेनस् इस वक़्त अपने मुल्ककी मदत करनेको फिर आ पहुचा, और बिलग्रेडको फ़तै न होने दिया। इस युद्धमें हंगेडी जेनस्ने बड़ी होशियारी और जवांमर्दीसे काम लिया। यह बिलग्रेडके अन्दर जा पहुंचा, और बड़ी भारी सेनाको लेकर

मुराद सानी पर टूट पड़ा, जिसका नतीजा यह हुआ कि मुराद ज़ख्मी हुआ, और बड़ी मुश्किलसे अपनी जान बचाकर ईडरिया-नोपिल पहुंचा।

१४५८ ई० में जार्ज ब्रेंकोविच ९१ वर्षकी अवस्थामें मर गया। इसके मरे बाद सार्वियामें फिर अन्दरूनी झगड़े शुरू हो गये—अर्थात्—जार्ज ब्रेंकोविचकी विधवा और उसके तीन लड़कोंमें फ़साद शुरू होगया। इनमें सबसे छोटे लड़के लाज़ारने अपनी मांको ज़हर देकर मार डाला और अपने दोनों भाइयोंको मुल्कसे निकाल दिया। यही क्यों २०,०००) अशर्फियां सालाना ख़िराजके तौरपर सुलतानको देना मंज़ूर कर लिया। १४५८ ई० में इसकी मौत होगई। इस वक्त तुर्कोंने सार्वियाको अपने राज्यमें मिलाना चाहा। सार्वियामें इस वक्त ऐसा कोई शख्स न था जो फ़ौज इकट्ठी कर तुर्कोंका मुक़ाबला करता। लाज़ारकी विधवा हेलीना (Helena)-ने इस वक्त यह चाहा कि पोपके साथ एका होजावे तो तुर्कोंके हमलोंसे रक्षा हो सकती है, परन्तु सर्वियाके लोगोंने रोमन केथलिक होनेसे बिल्कुल इंकार कर दिया और बोसेनियाकी भी यही दशा रही। आख़िरकार इन दोनों मुल्कोंको तुर्कोंने ले लिया। आपको यह जानकर कदाचित् अचंभा होगा कि एक ईसाई जातिने दूसरी इसाई जातिसे इतनी नफ़रत ज़ाहिर की कि सर्विया और बोसेनियाने रोमनकेथलिक होनेकी अपेक्षा

मुसलमानोंके आधीन होजानेको ज़्यादा अच्छा समझा । परन्तु इसका कारण यह था कि रोमनकेथलिक लोगोंने दूसरे ईसाइयोंपर बड़े ज़ुल्म किये थे ।

१४५९ ई. में सार्विया एक अलग सलतनत नहीं रहा बल्कि तुर्कोंकी सलतनतमें मिल गया । इसी तरह बोसानिया भी तुर्कोंके हाथमें आगया क्योंकि उसका राजा मारा गया ।

एक समय तो वह था कि सार्विया एक बहुत बड़ा राज्य था और उसका बादशाह सब प्रकारसे स्वतन्त्र था परन्तु १४५९ में यह बात जाती रही और सर्वियाको, अपना मालिक क़ुस्तुन्तुनियाके बादशाहको मानना पड़ा । इस समय क़ुस्तुन्तनियाका बादशाह मुहम्मद सानी था ।

इस पतनके कारण, आपने मेरी सुनाई हुई संक्षिप्त तवारीख़से जान लिये होंगे परन्तु मैं उन्हें थोड़ेमें बतलाकर अपने इतिहासका दूसरा भाग शुरू करूंगा ।

पहला कारण तो यह है कि सार्विया छोटे—छोटे प्रान्तोंमें बँटा हुआ था और उनपर एक एक सरदार हुकूमत करता था जो एक दिल होकर कभी काम नहीं कर सकते थे । दूसरा कारण यह है कि जो बादशाह सर्वियामें हुआ उसीके घरेलू झगड़े होते रहे । तीसरा कारण यह हुआ कि आस-पासके मुल्कोंसे अनबन रही । ये राज्य कभी एकदिल न हुए । चौथी बात यह थी कि ये लोग ईसाई थे परन्तु इनमें एक हिस्सा

ग्रीकचर्चका था और दूसरा रोमन केथलिक, और इन दोनोंमें आपसमें बड़ी दुश्मनी रही। इधरकी तो यह दशा थी और उधर तुर्क लोग एक अफ़सरकी आधीनतामें थे और उनमें मत-मतान्तकरके झगड़े न थे। इन सब बातोंका यह नतीजा निकला कि तुर्क बहुत थोड़े अर्सेमें यूरपके बहुत बड़े हिस्सेके मालिक बन गये। अब आप स्वयं विचार कर सकते हैं कि आपसके मेल-मिलापके क्या परिणाम होते हैं और ईर्ष्या-द्वेषके क्या!

१४५९ में सर्विया तुर्कोंके क़ब्ज़ेमें आचुका था और बहुत अर्सेतक उनकी मातहतीमें रहा। क़ुस्तुनतुनियासे हंगरीका रास्ता इसी इलाक़ेमें होकर है इसलिये क़ुस्तुन्तुनियाके बादशाहोंको इस बातकी बड़ी भारी ज़रूरत रही कि वे सर्वियाको अपने क़ब्ज़ेमें रक्खे। बस उन्होंने सार्वियापर अपना अच्छा दखल रक्खा। अब सर्विया तुर्कोंके राज्यका एक हिस्सा बन गया और उसमें स्वाधीनताकी गन्धभी न रही। क़ुस्तुन्तुनियाके बादशाहोंने सर्वियाके काश्तकारोंसे बेगार लेना शुरू कर दिया और सर्वियाके सरदारोंकी जागीरें छीन कर अपने आदमियोंको दे दीं। सर्वियाके लोगोंके हथियारभी छीन लिये, जिनके छिन जानेसे उन्हें सख़्त तकलीफ़ हुई। क्योंकि ये लोग हथियार बांधनेके ऐसे आदी थे कि जब कभी घरसे बाहर निकलते थे, हथियार बांधे बिना नहीं निकलते थे। इस हुकुमकी इतनी पाबन्दी की गई कि जब तुर्कोंके विरुद्ध सर्वियामें बल्वा हुआ तब

सर्वियावालोंके पास सिवाय लकड़ीके कोई हथियार न था। इनसे घोड़ेंभी छीन लिये गये थे और हर पांचवें वर्ष इन्हें बादशाहकी फ़ौजके लिये अपने नवयुवकोंको भेजना पड़ता था। मतलब यह है कि सर्वियाकी असली शक्ति सुलतानके लाभके लिये भेट करदी जाती थी । यहां पर बादशाहने जज़िया भी मुक़र्रर कर दिया था जो हरशख्सको ७ वर्षकी अवस्थाके बाद देना पड़ता था। इन लोगोंकी निगरानीके लिये एक क़ाज़ी मुक़र्रर कर दिया जो इनके मत और रीति-रिवाज़से बिल्कुल अजान था। इसी तरह बिल्ग्रेडमें भी एक तुर्की मुल्ला भेज दिया। कुछ अर्सेतक तो ये लोग अपना पादरी आप मुक़र्रर करते रहे परन्तु यह बात सुलतानको नापसन्द हुई और उसने इनके मज़हबी कारोबार भी एक ग्रीक पेट्रिअर्च (Patriarch)के सिपुर्द कर दिये जो कुस्तुन्तुनियामें रहता था और सुलतानका मातहत था। इस आदमीका यहभी काम था कि सर्वियाके इलाक़ोंमें पादरी भेजे । इस कारवाईसे सर्वियाको बड़ा नुक़सान पहुँचा, क्योंकि यह ऐसा मामला था कि इसमें ये स्वाधीन थे, परन्तु इस कारवाईसे इनकी धार्मिक स्वतन्त्रताभी जाती रही और वह बादशाहके हाथमें चली गई। क्योंकि उस ग्रीक पेट्रिअर्च(Patriarch) का मुक़र्रर करना बादशाहकी मर्ज़ीपर था और वह बादशाहकी आज्ञाका पालक होता था। इससे उसकी सहानुभूति सर्वियावालोंके साथ न थी। इस पेट्रिअर्च (Patriarch) और पादरियोंके ख़र्चका रुपया सर्वियावालोंसे लियाजाता था परन्तु

इस रुपयेका ख़र्च करना बादशाकी इच्छाके आधीन था। इससे ग्रीक पादरी भी तुर्की अफ़सरोंकी तरह ज़ालिम थे। सर्वियावासियोंसे बहुत ज़्यादा रुपया वसूल किया जाता था। और तमाम सरकारी कामोंमें ऐसी ख़राबी पड़ गई थी कि बड़ी-से-बड़ी जगहसे लेकर छोटी-से-छोटी जगह तक नीलाम की जाती थी। इस लिये जो इस जगह मुक़र्रर होता था वह अपना फ़ायदा करनेके अलावा नीलामका रुपयाभी प्रजासे ही वसूल करता था। इतिहासकारोंने लिखा है कि उस ज़मानेमें तुर्कोंका ऐसा ज़ुल्म था कि तुर्कोंके ख़िलाफ़ अदालतमें कोई शिकायत नहीं सुनी जाती थी। इस वजहसे जिनलोगोंको अपनी इज़्ज़त और आबरूका ख़ियाल था शहरोंको छोड़कर जंगलोंमें जा बसे थे कि जहांपर तुर्क बहुत कम आते जाते थे। इस बे-पूछीकी दशामें सर्विया कोई चारसो ४०० वर्ष तक तुर्कोंकी मातहतीमें रहा। यद्यपि इन ४०० वर्षोंमें भी कई बार लोग तुर्कोंके विरुद्ध फ़साद करनेको तैयार हुए परन्तु कुछ ज़्यादा कामयाबी हासिल न कर सके, क्यों कि ये स्वाधीनताके विचार बाहरसे पैदा हुए थे। और वे लोग जो सर्वियामें रहते थे इतने कमज़ोर और कम हिम्मत हो गये थे कि उनको तुर्कोंके विरुद्ध सर उठानेकी भी जुरत न रही थी। इसके सिवाय उन लोगोंके पास हथियार भी न थे। कभी कभी इन सर्वियावालोंने ऐसा भी किया कि तुर्कोंसे ज़बरदस्ती हथियार छीन

लिये और जंगलोंमें जा बसे और वहांसे इनपर हमले करते रहे। इस ज़मानेमें जब कि तुर्कोंका सर्वियापर पूरा अख़्तियार था बहुतसे सर्वियाके ख़नदान वहांसे बाहर जाने लगे, तब हंगरीके बादशाहने उनके साथ बड़ी हमदर्दीका बर्ताव किया कि उन्हें अपने इलाक़ेमें आबाद होने दिया। इतनाही नहीं, उन्हें अपनेही रीति-रिवाज़ ज़बान वग़ैरा क़ायम रखनेकी इजाज़त दी। ये लोग वहांपर अपने अफ़सरकी मातहतीमें आज़ादाना तोरपर रहे। इसी १४७५ ई. के ज़मानेमें हंगरीके बादशाहने तुर्कोंपर चढ़ाई की और उनसे बिलग्रेड छीन लिया। इसके पांच-छह वर्ष बाद मुहम्मद सानी मर गया और एक ग़ैर शख़्सने क़ुस्तुन्तुनियाकी बादशाहतका दावा करना शुरू कर दिया, इस दावेदारने हंगरीके बादशाके पास सन्देश भेजा कि अगर यह मुझे मदद देगा और मैं कामयाब हो जाऊंगा तो यह सारा सलतनतका हिस्सा क़ुस्तुन्तुनियासे अलग कर दिया जायगा। परन्तु हंगरीका बादशाह और-और सरकारी मामलोंसे घिरा हुआ था इस कारण मदद न कर सका। और फिर उसे ऐसा मौक़ा न मिला। उस ज़मानेमें इन हिस्सोंमें बहुतसे झगड़े होते रहे। एक आदमी जिसका नाम क्रीनोविच (Crinovich) था खड़ा हो गया और अपने आपको सर्वियाका बादशाह ज़ाहिर करने लगा। परंतु सच्ची बात तो यह है कि वह एक लुटैरा था और उसने अपने ज़ाती फ़ायदेके लिये यह काम किया था।

१५७७ ई. में आस्टरिया और हंगरीके बादशाहने इन लोगोंके साथ नये सन्धिपत्र किये जिनमें इन लोगोंके पिछले हक़ पूरे तोरपर मान लिये गये। यह वह ज़माना था जब हंगरीका मिलाप आस्ट्रियाके साथ हुआ।

इसके बाद सर्वियाके लोग अच्छी तरह आस्ट्रियामें मिल गये परंतु इनके रीति-रिवाज़ मत और राजकीय क़ानून अलग रहे। १६८३ ई. में इन्हें तुर्कोंके हाथसे वाना बचानेका फ़ख़ हासिल हुआ था। जब सर्वियावालोंने तुर्कोंका मुक़ाबला किया तो प्रिंस योसरीनने इन वीरोंकी बड़ी तारीफ़ की थी।

१७३९ में जो अहदनामा बिल्ग्रेडमें हुआ था उससे तमाम सर्विया-मये राजधानीके-तुर्कोंके सिपुर्द कर दिया गया। इससे सर्वियाकी सारी आशाओंका ख़ून होगया। इधर सर्वियाके उन लोगोंके-जिन्होंने आस्ट्रियामें निवास किया था-सारे हक़ एम्प्रेस मेरिया देरेसा (Empress Maria Theresa) ने छीन लिये। इससे ये लोग जिनकी संख्या १,००,००० एक लाखसे कम न थी आस्ट्रियाको छोड़कर १७४० ई. में रूसमें जा बसे। रूसके जिस हिस्सेमें ये लोग आबाद हुये थे वहांपर अबतक इनके पुराने निशान मिलते हैं। इन लोगोंने रूसके इलाक़ेमें जो नये गांव और शहर बसाये उनके नाम सर्वियाके गांवों और शहरोंके नामोंपर रक्खे क्योंकि ये नाम इन्हें बहुत प्यारे थे। जब जोज़फसानी आस्ट्रियाकी गद्दीपर बैठा तो इसे

सर्वियावालोंके साथ बड़ी हमदर्दी थी । इसने रूसकी रानी कैथराइनके साथ संधि कर ली और यह इरादा किया कि तुर्कोंको यूरपसे निकाल दें। १७७८ ई. में तुर्कोंपर बड़ा भयंकर हमला किया गया और सर्वियाका बहुत बड़ा हिस्सा उनके हाथसे निकाल लिया तुर्कोंको बहुत बड़ी हार दी । परंतु इसके बाद जोज़फ़ सानी और कैथराइनमें मनमुटाव इस बातपर होगया कि तुर्कोंकी सलतनतका बंटवारा कैसे किया जाय। इस आपसी अनमेल-का यह नतीजा निकलाकि जो कुछ इनके इरादे थे पूरे न हुए।

१७९० ई. में जोज़फ़सानी मर गया इधर इसी ज़मानेमें फ्रांसमें बड़ा इनकिताब हुआ कि जिससे आस्टरियाके सारे विचार उधर जा लगे । सर्विया वग़ैराका उसे कुछ ख़ियाल न रहा । सिस्टोना (Sistona) के अहदनामेसे यह बात तै पाई कि सर्विया फिर तुर्कोंकी मातहतीमें दे दिया जावे । बस फिर तुर्की पाशा बिलग्रेडमें आ बिराजा और उसने अपनी हुकूमतका झंडा गाड़ दिया ।

परंतु १७७८ वाले युद्धका सर्वियावालोंपर बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ा अर्थात् उनके दिलोंकी कमज़ोरी और कम हिम्मती निकल गई और बात—बातमें तुर्कोंका मुक़ाबला करने लगे। उस ज़मानेके तुर्क अफसरोंका कहना है कि आस्टरियावालोंने इन सर्वियावालोंमें कैसी बहादुरी और हिम्मतकी रूह फूंक दी है कि ये लोग थोड़ेसे ज़मानेमेंही ऐसे बहादुर और जवांमर्द

बन गये हैं । इस अदल-बदलीके ज़मानेमें सर्वियाने बड़ी तकलीफ़ और तजर्बेसे यह बात हासिल की कि स्वाधीन होनेके लिये हमींको हाथ पैर हिलाने चाहिये । स्वाधीन होनेकी इनकी आशाओंका कई बार ख़ून हो चुका था । क्योंकि आस्टरिया-वालोंने जब कभी इन्हें मदद देनेका वादा किया तब ये बड़ी जवांमर्दीसे तुर्कोंके विरुद्ध लड़े और जीत भी पाये परंतु जब सुलाह और अहद पैमानका वक़्त आया तब हमेशा इनके विरुद्ध मामले तै पाये ।

आजकल सर्विया एक स्वाधीन देश है । इसे स्वाधीन होनेमें किसीने मदद नहीं दी । इस स्वाधीनताका मूल एक किसान है जिसका हाल अब वर्णन किया जाता है ।

उन्नीसवीं सदीके प्रारम्भमें अर्थात १८०४ ई. में सर्वियामें हाज़ी मुस्तफ़ा नामका एक तुर्की पाशा हुकमरां था । यह ऐसा भला मानस था कि इससे आमतोर पर सब प्रसन्न थे । यहां-तक कि ईसाईभी इससे प्रसन्न थे । इसके ज़मानेमें सर्वियामें बड़ा अमन रहा, तिजारतको तरक़्क़ी हुई और सबको अच्छा न्याय मिलता रहा । हाज़ी मुस्तफ़ा ऐसा नेक आदमी था कि सार्वियाके सारे लोग उसे अपने बापके बराबर समझते थे । उस वक़्त यह ख़ियाल था कि ऐसे सत्पुरुषके समयमें कोई बखेड़ा खड़ा न होगा । परंतु बादशाह तीसरे सलीमने राजके कारोबारमें जो फेरफार किये उससे जांनिसारी (Janissaries) बाद-

शाहकी फ़ौज) बादशाह और सर्वियावालोंके विरुद्ध होगई। जिससे बहुत बड़ा फ़साद सर्वियामें खड़ा होगया और इसके परिणाममें सर्विया स्वाधीन होगया। बहुत अर्सेसे यह ख़ियाल था कि एक दिन यह सुलतानकी फ़ौज सलतनतको ज़ुरूर खड्डेमें डालेगी क्योंकि पूरे तोरपर यह किसीकी फ़र्मां बरदार न थी। सबसे ज़्यादा सरकश वह फ़ौज थी जो बिल्ग्रेडमें रहती थी। वह किसीको अपना अफ़सर न मानती थी। यहांतक कि बादशाहके हुक्मका भी उसपर कुछ असर न होता था। आप ख़्याल कर सकते सकते हैं कि तुर्की पाशाओंका उस सेनापर क्या अख़्तियार होगा जो नाम मात्रके लिये उसके अफ़-थे। इन जांनिसारीने सर्वियाके लोगोंपर बहुत ज़्यादा ज़ुल्म करने प्रारंभ कर दिये और बहुत ज़्यादा माल हासिल लेना शुरू कर दिया जो उस माल हासिलसे बहुत ज़्यादा था जो सुल-ताननने मुक़र्रर किया था।

सुलताननने एक हुक्मसे जानिसारीजको सर्वियासे निकाल दिया और देशमें अमन चैन फैला दिया। इससे थोड़े समयके बादही इन उद्दण्ड नाफ़रमां-बरदार जांनिसारीजने सर्वियापर हमला कर दिया जिसे हाजी मुसाफ़ा और सर्वियावाले बड़ी मुश्किलसे बचा सके। यद्यपि बादशाह इनसे बहुत नाख़ुश था परंतु फिरभी उसने इन्हें सदाके लिये देश निकाला देना न चाहा क्योंकि ये लोग भी मुसलमान थे। आख़िरकार सुलताननने

इन्हें सर्वियामें आनेकी इजाज़त देदी। इन लोगोंनें इस कृपाका यह बदला दिया कि सर्वियामें आतेही अपनी पहिली आदतके मुआफ़िक प्रजापर ज़ुल्म करना शुरू कर दिया। हाज़ी मुस्तफ़ानें इन्हें रोका और ताकीद की कि तुम्हें कानूनको हाथमें न ले लेना चाहिये, तो इन्होंने उसे बिल्ग्रेडके क़िलेमें क़ैद कर दिया और बादमें वहांपर मार डाला। सुलतानको यह जवाब दिया कि यह ईसाइयोंमें मिलकर काफ़िर होगया था इससे हमने इसे मार दिया।

इसके बाद इस फ़ौजके चारों अफ़सरोंने आपसमें सर्वियाको बांट लिया और तुर्की पाशाकी हुकूमत नाम मात्रको रह गई। प्रजाने बादशाहसे शिकायतें कीं परन्तु कुछ लाभ न हुआ। इन लोगोंका यहां इतना ज़्यादा ज़ोर होगया कि १८०४ ई. में इन्होंने सर्वियामें क़त्ले आम शुरू कर दिया और कोई शहर व गांव ऐसा न छोड़ा जहांके आदमी बिना कारण न मारे गये हों। जो लोग इस क़त्लसे बचे वे आसपासके देशोंमें जा छुपे। इस क़त्लका आम लोगोंपर बुरा असर पड़ा और यह ख़ाहिश हुई कि कोई ऐसा आदमी मुक़र्रर किया जावे जो अगुवा बनकर तुर्कोंका मुक़ाबला करे और देशको स्वतन्त्र कर-सके। हर शख़्सकी निगाह कारा जार्जपर पड़ी कि जिसने बड़ी सफलता और बहादुरीसे काम किये। इसने बड़े आश्चर्य-कारक काम किये। यह एक किसानका लड़का था। इसने

१७८७ के बलवेमें हिस्सा लिया था और इसे अपने बूढ़े बापके साथ भगना पडा था। ये जब साऊथ समुद्रपर पहुंचे तो बापने आगे जानेसे इंकार किया। इसपर कारा जार्जने अपने बापको तमंचेसे मार डाला। आप ख़ियाल करते होंगे कि इसने कैसी बेरहमीका काम किया परन्तु असली बात यह है कि यह अपने बापको ज़िन्दा छोड़ देता तो तुर्क लोग न जाने किस बेरहमीसे उसे हलाक़ करते।

यह काराजार्ज कुछ अर्सेतक आस्ट्रियामें रहा था परन्तु जिस ज़मानेमें हाज़ी मुस्तफ़ा सर्वियाका हुकुमरां था उस ज़मानेमें सर्वियामें वापस आगया था। यहां आकर इसने एक छोटासा सुवरनका कारख़ाना खोल लिया था। इस व्यापारसे इसे फ़ायदा हुआ और यह किसी क़दर मालदार बन गया। जब सर्वियाके लोगोंने इसे अपना अफ़सर बनाना चाहा तो इसने इंकार किया और कहा कि मैं पढ़ा लिखा नहीं हूं जो शख़्स मेरे हुक्मको न मानेगा उसकी कोई दलील नहीं सुन सकता, मैं उसे फ़ौरन् मार डालूंगा। परन्तु ऐसी सख़्त शर्तको भी मंज़ूर कर सर्वियावालोंने इसे अपना अफ़सर बना लिया। इसका एक भाई और था जिसे यह बहुतही प्यार करता था। एक बार उसने हुकुम उदूली की। जिसका उसे फ़ौरन इनाम मिला और वह मौतका दंड था। यह अख़ीर वक़्त तक बहुत सादा रहा। आला हाकिम होजाने पर भी यह मामूली पोशाक

पहनता रहा। यहांतक कि जब यह सार्वियाका प्रिंस मुक़र्रर होगया तब भी यह अपनी लड़कीसे (गांवकी और लड़कियोंके मुआफ़िक़) कुएसे पानी भरवाता था। यद्यपि यह बहुत बड़े दर्जेका आदमी था परन्तु पढ़ने लिखनेमें बिल्कुल कोरा था। थोड़ेही दिनोंमें इसने बहुत बड़ी फ़ौज अपने पास जमा कर ली और ज़ांनिसारीज़को पैर-पैर पर हराना शुरू करं दिया। इधर कुस्तुनतुनियाका बादशाह जांनिसारीज़से पहिले ही नाख़ुश था इसलिये उसने बोसीनाके पाशाको हुकुम दिया कि वह अपनी फ़ौजके साथ जाकर सर्वियावालोंको मदद दे। मतलब यह कि सर्विया इन जांनिसारीज़से छुटकारा पागया। अब सुलतानको यह ख़ियाल हुआ कि शायद सर्विया अब हमारी आधीनताको स्वीकार कर लेगा। परन्तु काराजार्जकी जीतोंने सर्वियाके दिलमें ऐसा खियाल पैदा करदिया कि हम लोगोंको चाहिए कि हम अपने घरू मामलोंमें तुर्कोंको हाथ डालनेका मौक़ा न दें। ये लोग सर्वथा स्वतन्त्र होना नहीं चाहते थे क्योंकि इनमें ऐसी शक्ति न थी कि अकेले रहकर किसी बड़ी सल्तनतका मुक़ाबला कर सकें। इसलिये इन्होंने रूसके बादशाहके पास पैग़ाम भेजा कि वह इनका सहायक बनजाय। उसने इस बातको मंजूरभी करलिया। परन्तु उस ज़मानेमें नेपोलियन बोनापार्टकी जीतोंसे रूस इतना घबराया हुआ था कि वह स्वयं बेभान हो रहा था इसलिये वह इनकी कुछ मदद न कर सका। इधर सर्वियावालोंने तुर्की सम्राट्से यह ख़ाहिश की कि जो क़िले सर्वियामें हैं इनमें

तुर्की फ़ौजें न रक्खी जावें, जिसे सम्राट्ने नामंज़ूर किया, इस पर सर्विया और तुर्कोंमें लड़ाई छिड़ गई । सुलतानने बड़ी भारी सेना सर्वियामें भेजी परन्तु सर्वियावाले बड़ी बहादुरीसे लड़े क्योंकि इन्हें अपने देशसे पूरीपूरी जानकारी थी । ये लोग वहांके जंगली रास्तों और छुपनेके मकानोंसे ख़ूब वाकिफ़ थे । ४ अगस्त १८०६ को एक बहुत बड़ी लड़ाई हुई जिसमें काराजार्जकी जीत हुई । इसपर काराजार्ज और स्कोड़ा (Skodra) के पाशामें सुलहनामा हुआ और सर्वियासे क़ुस्तुननियाको सब मामलें तै करनेके लिये दूत भेजा गया । क़ुस्तुन्तुनियाका बादशाह इन्हें इस ख़ियालसे बहुतसी रियायतें देनेको तैयार होगया कि कहीं रूस और सर्वियामें मेल न हो जावे । परन्तु इसी अर्सेमें बड़ा पलटाव होगया । तीसरे सलीमको यह खियाल होगया कि रूसको नेपोलियनके साथ युद्ध करनेसे फ़ुरसत नहीं मिलेगी और वह सर्वियाकी मदद न कर सकेगा । बस इसने वादोंका कुछ ख़ियाल न किया और सर्वियापर चढ़ाई कर दी । यह वाक़ा बिलग्रेडमें हुआ जहांपर तुर्कोंकी बड़ी भारी हार हुई । और सर्वियावालोंने दो दिनतक आमतोरपर क़तल किया । यहांतक कि उस फ़ौजके बहुतही कम आदमी ज़िन्दा रहे जिन्होंने यह हाल क़ुस्तुनतुनियामें जाकर सुनाया । एक मुद्दतसे इन लोगोंके सीनेमें जो द्वेष और कड़ाईका असर भरा हुआ था वह इस घातकी कारवाईके रूपमें प्रकट हुआ ।

इस वक्त सर्विया स्वतन्त्र होगया और कारा जार्जविचको नये सिरेसे राज्यका इन्तिज़ाम करना पड़ा। सबसे पहले इसने अपने राज्यमें कौंसिल मुक़र्रर की जिसका काम रुपया इकट्ठा करना था। क्योंकि इसे एक बहुत बड़ी सेना अपने देशकी रक्षा करनेके लिए रखनी थी और अदालतों व तालीमका भी इंतिज़ाम करना था। बस सर्वियामें बहुतसे मद्रसे खोले गये। इसके सिवाय एक बड़ी कौंसिल और थी जिसका काम यह था कि वह हरसाल इकट्ठी होकर लड़ाई और सुलहके मामलोंको तै करे और संगीन अपराधियोंको सज़ायें दे। इन दोनों कौंसिलोंका बड़ा अफ़सर कारा जार्ज था। जब कभी कौंसिलके मेम्बरोंमे इसकी बात न मानी जाती तो यह फ़ौरन् फ़ौजको हुक्म देता था कि इन मेम्बरोंको आ घेरो और वह बन्दूक़की नालें मेम्बरोंके जिस्म पर आ लगाती थी। बस इस तरकीबसे यह जो कुछ कहता था उसेही मेंबर मंज़ूर कर लेते थे। यह कहा करता था कि एक अच्छे मकानमें बैठकर क़ानून बनाना और बहस करना आसान है परन्तु फ़ौज ले जाकर युद्धके मैदानमे तुर्कोंका मुक़ाबला करना कठिन बात है।

१८०९ ई. में जब तुर्की सब ओरसे ख़तरेमें थी तब उसपर कारा जार्जने भी चढ़ाई कर दी। रूसने सुलतानको घोषणा कर दी थी, क्योंकि वह नेपोलियनसे सुला करचुका था। मांटिनिग्रोमें तुर्कोंके खिलाफ़ जोश फैला हुआ था। बोसानिया

और हरज़े-त्रिगो-देनामें लड़ाईकी तैयारियां होरही थीं। ऐसे वक्तमें कारा जार्जने मांटिनिग्रोकी सहायतासे पश्चिमकी ओर हमला कर दिया। इसी वक्त उसे यह ख़बर मिली कि तुर्की फ़ौज पूर्वकी ओर सविर्यापर चढ़ाई कर रही है। कारा जार्जको इस वक्त विशेष सफलता न हुई क्योंकि उसके साथ, और रईसोंकी सहानुभूति न रही थी। उससे उसने नाउम्मेद होकर नेपोलियनके पास सन्देश भेजा।

इन सब दिक़्क़तोंके बाद काराजार्ज कुछ स्वतन्त्र हुआ और सर्वियाको फिर स्वतन्त्रतापूर्वक सांस लेनेका मौक़ा मिला। जब यह बाहरी हमलोंसे फ़ारिग़ हुआ तो भीतरी झगड़े खड़े होगये। इस वक्त सर्वियामें दो तड़ें थीं। एक रूसको चाहती थी और दूसरी आस्टरियाको। कारा जार्जने इरादा कर लिया था कि सर्वियाको अपना साथी करे। इस बातसे रूसके पक्ष-पाती विरुद्ध होगये। कुछ अर्सेतक रूसवाली तड़ ज़ोरपर रही परन्तु नेपोलियनवाले झगड़ेके कारण रूस सर्वियाको विशेष मदद न दे सका। ऐसा मौक़ा पाकर फ़ौरन् तुर्कीने सर्वियाके विरुद्ध जहादका फ़तवा दे दिया। इधर कारा जार्जने बड़ी सर-गरमीसे सर्वियावालोंको समझाया और अपनी सफलताके लिये परमेश्वरसे प्रार्थना की। इत्तिफ़ाक़की बात है कि इस वक्त कारा जार्जका दिल बहुत कमज़ोर होगया था, वह ऐन मौक़े-पर छुपकर आस्टरियाकी ओर भाग गया। इस वक्त सर्वि-

याका कोई पेशवा न था और जो आदमी कुछ कामके थे वे भी इसके पीछे पीछे रवाना होगये । और यह नो बरसके हमले जो कुछ सफलताके साथ हो रहे थे एकाएक बन्द होगये ।

कारा जार्जके चले जानेके बाद मिलोश ओब्रेनोविच (Milosh Obrenovich) इसकी जगह बन बैठा । यह वह शख़्स था जिसने पिछले जंगोंमें अच्छी काररवाइयां की थीं । यह एक मामूली किसानका लड़का था । इसके बापने ओब्रीनकी बेवाके साथ शादी की थी । इसीसे इसने अपने नामके साथ ओब्रीनका नाम भी लगा लिया था । यह वह ज़माना है जिस वक़्त सर्वियाके सरदार सर्वियाको छोड़ चुकेथे । इस ज़मानेमें तुर्कोंका मुक़ाबाला करना आसान बात न थी । इस लिये मिलोशने तुर्कोंकी आधीनता स्वीकार कर ली । बिल्ग्रेड-के पाशा सुलेमानने इसे बड़ी इज़्ज़तसे बुलवाया और तीन प्रान्तोंका अफ़सर करदिया । मिलोशके बारेमें कई तरहकी बातें फलीं । कुछ आदमी तो इसे बड़ा होशियार और कारिन्दा समझते थे और कई इसे दग़ाबाज़ मानते थे । ख़ैर जो कुछ-भी इसके बाबत ख़ियाल किया जाय ठीक है परन्तु इतना ज़रूर हुआ कि इसकी वजहसे सर्वियाको बड़ा लाभ हुआ । परन्तु सुलेमानके ज़ुल्मोंसे इसे भरोसा न रहा । यह सब कारो-बार छोड़कर जंगलमें चला गया । वहांपर इसने एक बड़ा दल इकट्ठा किया और तुर्कोंपर हमला करना शुरू करदिया । जब

इसके हमलोंकी सफलताकी ख़बर कारा जार्जको पहुंची तो उसका इरादा भी सर्विया वापस आनेका हुआ और सर्वियावालोंने भी उसे सर्विया आजानेका पैग़ाम भेजा। आख़िरकार १८१७ में कारा जार्ज सर्वियामें पीछा आगया। परन्तु इसके आनेसे मिलोश ओब्रेनोविच प्रसन्न न हुआ क्योंकि एक ही समय सर्वियामें दो अफ़सरोंकी ज़रूरत न थी। ये दोनों आदमी आपसमें मित्र न थे क्योंकि एक दूसरेको नहीं चाहता था।

गरज़ कारा जार्ज सर्वियामें आगया तो मिलोशने उसके ख़िलाफ़ तुर्की पाशाको इत्तिलादी और यह बात भी ज़ाहिर की कि वह सुलतानके ख़िलाफ सर्वियामें विद्रोह फैला रहा है। और मिलोशने वुइका (Vuica) नामके शख़्सको जो बड़ा डाकू था बुलवा भेजा और उससे कहा कि या तो तुम काराजार्जका शिर काट दो या मिलोशका। हुक्म पातेही उस डाकूने सोते हुए कारा जार्जका शिर काट लिया और वह शिर तुर्की पाशाके पास भेज दिया गया।

गरज़ सर्वियाका यह जवांमर्द इस बुरी तरह कुत्तेकी मौत मारा गया। उसी वक़्तसे ईन दोनों वंशोंमें झगड़े शुरू हो गये। सर्वियाको पिछली सदीके इतिहासमें इन दोनों वंशोंके झगड़े भरे पड़े हैं। अब मिलोशका मुक़ाबला करनेवाला कोई न रहा और यह १८१७ के नवम्बरमें सर्वियाका प्रिंस (Prince

of Servia) मुक़र्रर कर दिया गया और यह पद इसके वंश परम्पराके लिये मोरूसी हो गया। यह ख़िताब उस वक्त तक रहा जब तक यहांके शासन कर्ताने बादशाह (King) का ख़िताब न पाया—अर्थात् १८८२ तक क़ुस्तुनतुनियाके बादशाहने यह ख़िताव मंज़ूर न किया। और जब सर्वियाके दूत क़ुस्तुन्तुनिया पहुंचे तो वहांपर क़ैद कर लिये गये परंतु रूसने इस वक्त सर्वियाकी बड़ी मदद की। आख़िरकार ईडरियानोपलके सन्धिपत्रसे यह बात तै पाई कि सर्विया क़ुस्तुन्तुनिया के बादशाहसे बिल्कुल अलहदा कर लिया जाय और एक स्वतंत्र राज्य बना दिया जाय। हां क़ुस्तुन्तुनियासे सर्वियाका सिर्फ़ इतना सम्बध रहे कि वह हरसाल ख़िराज देता रहे और सरहदके क़िले तुर्कोंके क़ब्ज़ेमें रक्खे जावें।

१८३० में मिलोशको तुर्कीके सुलतानने सर्वियाका प्रिंस मंज़ूर किया। यह वह समय था कि जिस समय मिलोश अपनी पूर्ण उन्नति कर चुका था। और यहींसे उसकी अवनति होने लगी। सर्वियावालोंको अब यह मालूम हुआ कि उन्हें अपने मुल्कके आदमीकी हुकूमतसे कुछ ज़्यादा फ़ायदा न पहुंचा। इसने बड़ी कड़ाईसे टेक्स वसूल करना शुरू कर दिया और सरदारोंके साथभी इसका बहुत बुरा वर्ताव रहा। इन्हें बड़ा अफ़सोस हुआ कि इतने लड़ाई झगड़ेके बाद भी ऐसे आदमीसे पाला पड़ा जो तुर्कोंसे भी बहुत ज़्यादा ख़राब और ज़ालिम

है । इसने कौंसिलका बैठकें बन्द कर दी और अपनी इच्छाको क़ानून समझा । इसकी यह हालत हो गई कि जिस किसी आदमीकी कोई चीज़ इसे पसन्द पड़ती तो उसे वह ले लेता था और अपनी इच्छाके मुआफ़िक क़ीमत देता था । एक बार इसने बिल्ग्रेडके एक हिस्सेमें आग लागा दी क्योंकि यह वहांपर ज़कातका मकान बनवाना चाहता था । मतलब यह है कि इसने लोगोंके साथ बहुत बुरा वर्ताव किया और उनसे ग़ुलामोंके ऐसे काम लेना शुरू कर दिया । इसके ज़ुल्म इतने ज़्यादा बढ गये कि एक बार स्वयं इसके लड़केने इससे इन ज़ुल्मोंके लिये कहा । इस पर उसने यह जवाब दिया कि क्या मैं इनका मालिक नहीं हूं ! आख़िरकार लोगोंके ख़ियाल इसकी ओरसे विगड़ गये, और एक बार इसे मार डालनेकी साज़िश की गई । तब इसके ख़ियालमें आया कि वाक़ै मैं ग़लती पर हूं । इसने सर्वियाको कांस्टींटयूसन दे दिया । अर्थात् १५ फर्वरी १८३५ में सर्वियामें इसने बड़ी कौंसिल मुक़र्रर करके स्पीच दी और पश्चिमी दस्तूरोंके मुआफ़िक सर्वियामें क़ानून जारी करनेका वादा किया । और यहभी वादा किया कि आजसे क़ानून सबसे बढ़कर समझा जावेगा, स्वयं बादशाह उसके आधीन रहेगा । परंतु थोड़ेही समयमें यह मालूम हो गया कि सर्वियाके लोग ऐसी गवर्नमेंटके आदी नहीं है । इससे यह काम सफलता पूर्वक न चल सका । आख़िरकार इसने सब काम अपने हाथमें

ले लिया और लोगोंके साथ उसी सख्तीका बर्ताव शुरू कर दिया। इसकी इस दर्जेकी शक्ति देखकर तुर्की और रूसके बादशाहको कुछ ख़्याल होने लगा। तुर्कीको तो यह ख़्याल हुआ कि यह हमारे आधीन न रह स्वतन्त्र हो जायगा तो और इलाके भी जो इसाइयोंसे बसे हुए हैं स्वतन्त्र हो जांयगे। इधर रूस यह चाहता था कि यह तुर्कीकी अधीनतासे मुक्त हो जाय परंतु ऐसा ज़बर्दस्त न हो पावे कि रूसकी सहायताके बिना आरामसे रह सके। इसके लिये रूसके बादशाहने एक चाल चली। उसने सर्वियाके प्रिंस और प्रजामें नाइत्तिफ़ाकी करानेकी कोशिश की। और रूसकी इस जालमें यह भाई और सरदारों सहित फंस गया। रूसके बादशाहने एक प्रिंस डाल जारोंकी (Dal Joronki) को सर्वियामें भेजा और कहलवाया कि प्रजाको राजकाजमें विशेष हक़ मिलने चाहिये। इस समय इंग्लिस्तानकी सरकारने सर्वियाकी सहायता की, क्योंकि इंग्लेंड बरहंगम और मेंचेस्टरके बने हुए मालोंके लिये बाज़ार ढूंढ रही थी। वह चाहती थी कि मिलोश (जो बड़ा भारी हुकूमत करनेवाला है) से मित्रता हो जावे परन्तु मिलोशने विचार कर यही स्थिर किया कि रूसके साथ बिगाड़ना अच्छा नहीं है क्यों कि इंग्लेंड सर्वियासे बहुत दूर है और न सर्विया समुद्रके किनारे है कि ज़ुरूरतके वक्त वहांपर इग्लेंड अपनी फ़ौज भेज सके। आख़िरकार १८३८ में १७ मेम्बरोंकी एक कौंसिल

मुकर्रर की गई और इस समय मिलोशकी शक्तिका अन्त होगया क्योंकि कौंसिलका एक भी मेम्बर मिलोशका साथी न था। यद्यपि मिलोशने कौंसिलका मुक़ाबला करना चाहा परन्तु कोई इसका सहायक खड़ा न हुआ। आख़िर १६ जून १८३९ को इसने सर्वियासे अपना हाथ खींच लिया । इसकी जगह इसका बड़ा लड़का मिलोओगबरविच गद्दीपर बैठा । परन्तु इसका स्वास्थ्य अच्छा नहीं था। यह एक महीनेमें ही मर गया। इसके मरनेपर बहुत लड़ाई झगड़े शुरू होगये। परन्तु सर्विया-की कौंसिलने इसके छोटे भाई मेकाईल—ओगर—विचको मुक़र्रर किया और बादशाहने भी इसे मंज़ूर कर लिया। और उन दो आदमियोंको इसके मंत्री मुक़र्रर कर दिये जो इसके बड़े भाईकी नाबात्वगीके ज़मानेमे राजका काम करते थे। परन्तु ये दोनों प्रारम्भसे ही इसके विरुद्ध थे।

इन १७ मेम्बरोंने इस बेतरहसे राजकाज किया कि लोग इनके बहुत ख़िलाफ़ होगये और मिलोशके ज़मानेको याद करने लगे कि हम मिलोशके ज़मानेमें एक मनुष्यको रुपया देते थे और अब हमको १७ खाइयांमें रुपया डालना पडता है और वह भी ऐसी खाइयोंमें जिनमें पींदा नहीं है । इसका परिणाम यह हुआ कि मेकाइल उन दोनों मंत्रियोंसे स्वतन्त्र होगया और अपनी इच्छाके मुआफ़िक राज्यका काम करने लगा, परन्तु सर्वियाके सर्व साधारण लोग इसकी चिकनी चुपडी

बातोंसे प्रसन्न न हुए । अब इसे मालूम हुआ कि प्रजा मेरे विरुद्ध है तो इसने सर्वियाके राज्यसे इस्तीफ़ा दे दिया । जब वहांपर कोई मालिक न रहा तो लोगोंके विचार कारा जार्जके लड़के एलेक्झेंडर कारा जार्जकी ओर गये । यह एक सीधी–सादी प्रकृतिका मनुष्य था । सुलतान तुर्कीने इसे तुरंत मंज़ूर कर लिया परन्तु रूसके बादशाह प्रथम निकोलसने इसे मंज़ूर नहीं किया और कहलवाया कि इस विषयमें सर्वियाको बड़ी दानाईके साथ काम लेना चाहिये और चुनाव फिर होना चाहिये । सर्वियावालोंने रूसके बादशाहको अप्रसन्न करना पसन्द न किया और नाममात्रके लिये फिर चुनाव करके एलेक्झेंडरकाही नाम मंज़ूरीके लिये भेज दिया । एलेक्झेंडरके समयमें बहुत अर्सेतक सर्वियामें अमन चैन रहा क्यों कि वह अपने बापकी सी प्रकृति का न था. इसने सर्वियाके भीतरी मामलों को बहुत कुछ ठीक किया । इसके समयमें सड़कें बनाई गईं, क़ानून तैयार किये गये और सर्वियाको ऐसा ज़माना मिला कि जो झगड़े–फ़साद उसको रगरगमें भरे थे बिल्कुल मिट गये ।

परन्तु १८४८ में हंगरीमें झगड़े शुरू हुए कि जिनमें सर्वियावालोंको बड़ी दिलचस्पी थी । इन झगड़ोंके कारण १८५६ में पैरिसके सन्धिपत्रसे यह तै पाया कि सर्विया तुर्कीके बादशाहका मातहत समझा जाय परन्तु उसके घरेलू मामलोंमें

सुलतान कुछ हस्ताक्षेप न करने पावे । इस सन्धिपत्रमें यह बात विशेष रक्खी गई कि योरपकी अन्यान्य शक्तियोंके विरुद्ध सुलतान सर्वियापर फ़ौज न चढावे ।

सर्वियावाले अपने स्वभावसे लाचार थे कि वे एक समयतक एक बातसे प्रसन्न न रहे थे । वे लोग एलेक्ज़ेंडरके विरुद्ध होगये और इस बातका अफ़सोस करने लगे कि क्यों ओबर-निविचके वंशको सर्वियासे निकाला । अब ऐसा ज़माना आगया था कि एलक्झेंडर और प्रजाके दिलोंमें बहुत खींच होगईथी । यह मामला इतना बढ़ गया कि लोग उसकी जानके गाहक बन गये । सर्वियामें बातें होने लगीं कि इसकी जगह किसको दीजावे । कोई चाहते थे कि मिलोश और उसके लड़के-को बुलवाया जावे और किसीका ख़ियाल था इसके भतीजे कोही गद्दी दी जावे परन्तु इस बातपर सब एक मत थे कि एलक्ज़ेंडरकी बादशाही छीन ली जावे । आख़िर क़ौमी कौंसिल इकट्ठी हुई और इसने १८५८ ईसवीमें अलक्ज़ेंडरसे हुकूमन् इस्तेफ़ा ले लिया और इसे सर्वियाका छोड़ना पड़ा । सर्वियाका तख्त़ इसके बजाय प्रिंस मिलेशको दिया गया । यह मिलोस वही था जो बीस वर्ष पहले सर्वियाके सिंहासनको छोड़ चुकाथा । मिलोशने ज़्यादा अर्सेतक हुकूमत न की परन्तु अपने मरनेसे पहले उसने सर्वियाकी जातिको इस दरजेपर पहुंचा दिया कि सब उसकी प्रशंसा करने लगे इज़्ज़त करने

लगे। इसने आस्टरिया और तुर्कीको साफ़तोरपर इत्तला कर दी कि सर्वियाके भीतरी मामलोंमें मैं तुझें हस्ताक्षेप न करने दूंगा और तुर्की फ़ौजको जो इसके इलाकेमें रहतीथी हुकमन् निकाल दिया। सुलतानको कहलवा भेजा कि जो अहदनामा पैरिसमें हुआ है उसपर सबको चलना चाहिये।

सर्वियामें जो राजा होता था उसकी मंज़ूरी तुर्कीसे ली जाती थी। परन्तु इसने इस सम्बन्धमें सर्वियाके निवासियोंसे कहा कि यह बड़ी शरमकी बात है कि तुह्मारे बादशाहको दूसरी सलतनत मंजूर करे। इसपर यह तै पाया कि आयन्दासे सुलतानकी मंजूरीकी ज़ुरूरत नहीं है। १८६० में इसका अन्तकाल होगया। यह अच्छा हुआ कि इसने ज़्यादा राज न किया। क्योंकि इसे तजरबेसे कुछ फ़ायदा न हुआ। इसने देश निकालेके समयमें न कोई नई बात सीखी और न पुरानीको भुलाया।

जिन्हें इसके कारनामें याद थे वे लोग इसे बड़ी इज़्ज़तकी निगाहसे देखते थे। यह राज्यके कामोंमें ऐसा होशियारथाकि प्रत्येक छोटे बड़े कामसे इसे पूरी जानकारी थी। गरज़ यह है कि इसकी मौतके साथ सर्वियाका जंगी ज़माना ख़त्म होगया। यद्यपि इसमें दोषभीथे परन्तु फिरभी सर्वियाका बड़ा ही हमदर्द था। इसमें सन्देह नहीं कि काराजार्जके ख़ूनका धब्बा इसके शिरपर क़ायम रहेगा परन्तु उस ज़मानेमें ऐसा ख़ून

करना नहीं जानतीथी कि एक राजाको देश निकाला दे और उसकी जगह दूसरेको मुक़र्रर करे, या, जिस वादशाहको देश निकाला दिया गया हो उसे फिर वादशाह बनावे। गरज़ यह कि पार्लियामैंट इसी उघेड़ बुनमें लगी रहती थी। इसके मेम्बर वहुत कुछ स्वतन्त्र हो गये थे और अदालतोंको कुछ नहीं गिनते थे। परंतु मेकाइलने इनके इस ख़ियालको ग़लत कर दिया और यह क़ानून बना दिया कि यदि पार्लियामैंटका कोई मेम्बर किसी तरहकी वेउनवानी करेगा तो वह अदालत के हुक्मसे अलाहदा कर दिया जावेगा। जो लोग सर्वियासे वाहर यूरपके अन्यान्य देशों में रहे थे उनका भी यही विचार था कि यहांकी पार्लियामेंटको अंग्रेज़ी गवर्नमेंटका अनुकरण करना चाहिये। परंतु यहांके किसान जो शिक्षित नहीं थे इन शिक्षित मनुष्यों पर सन्देह करते थे क्योंकि वे इनकी कररवाइयों को समझ नहीं सकते थे। जब यहां पर शिक्षाका ख़ूब विस्तार हुआ तो लोग अपने पोलीटिकल हक़ोंको ज्यादा समझने लगे। ऐसा होने पर मेकाइलने-प्रेस स्वातंत्र्य (free press) की इजाज़त देदी। इस बातका भी कोशिश की कि यहां पर जो लोगोंसे आयकर लिया जाता है वह हैसियतके मुआफ़िक सब से लिया जाय क्योंकि अभीतक यह कर सबसे बराबर एकसे तोर पर लिया जाताथा, जिस से लोगोंपर बड़ा जुल्म होता था। परंतु इसे इस बातमें सफलता न हुई। इस सफलताके न होनेसे इसने नई तरकीव निकाली और वह यह

थी कि इसने प्रत्येक प्रान्त से एक ख़ास रक़म वसूल करने का हुक्म दिया और आफ़िसरोंको समझा दिया कि जो लोग ज्यादा धन और हैसियतवाले हों उनसे ज्यादा कर लिया जाय।

इसीके ज़माने में फौजका भी अच्छा इन्तिज़ाम किया गया। अबतक यहांकी फ़ौज एक झुंडके समान थी। न उसके पास हथियार थे और न वह युद्धकलाकी जानकार थी। यह फ़ौज बिना किसी प्रकारके क़ायदेके रहा करती थी। यह केवल छापे मारनेका काम किया करतीथी। मेकाइल अपनी प्रजाके शौर्य-वीर्यसे ख़ूब वाक़िफ़ था। वह जानता था इसे अच्छी तरह कवायद सिखाई जाय और अच्छे हथिहार देदिये जांय तो बड़ी अच्छी सेना हो सकती है। इस ख़ियालका इसपर इतना अच्छा असर पड़ा कि इसने दो लाख बन्दूकें ख़रीद कीं। यद्यपि तुर्क लोग इन बन्दूकोंका सर्विया में आने देना पसन्द नहीं करते थे परंतु किसी-न-किसी तरकीबसे मेकाइल इन्हें सर्विया में ले आया और बहुत सस्ते दामों पर लोगोंके हाथ बेच दिया। इसके बाद इसने अपने यहां ज़रूरी फ़ौजी तालीम दाखिल करदी। इसमें हरेक प्रजाके शख़्सको एक मुक़र्रर उम्रके बाद फ़ौजमें भरती हो कर जंगी तालीम लेनी पड़ती है।

गरज़ सर्वियाका प्रत्येक पुरुष जिसकी अवस्था २० वर्षसे ऊपरथी फ़ौजका काम सीखने को लाचार किया गया। इसने रिसाले और तोपख़ाने भी तैयार किये। इन बातोंका असर

अब देशमें भलीभांति जान पड़ने लगा। अब जब कभी मेकाइलको सुलतान से किसी प्रकारकी मंज़ूरी हासिल करनी होती थी तो उसे हासिल करनेकी बड़ी भारी दलील यह फ़ौज थी।

इसके बापके ज़माने तक सर्विया तर्कोंको ख़िराज देता रहा और तर्की सेना यहांके क़िलोंमें क़ायम रही, परन्तु इसे यह बात पसन्द न थी। इसने विचार कर लिया कि मुझे तुर्कोंसे सर्वथा स्वतन्त्र हो जाना चाहिये। यहां पर एक दस्तूर यह भी था कि जब कोई नया बादशाह गद्दी पर बैठता था तो उसकी मंज़ूरीका फ़रमान बिल्ग्रेड के मैदान में फ़ौजके साम्हने सुनाया जाता था और वहां पर बादशाहको भी हाज़िर रहना पड़ता था। जब यह गद्दी पर बैठा तो इस दस्तूर के मुआफ़िक इसे भी उस मैदान में हाज़िर रह कर फ़रमान सुननेको कहा गया परन्तु इसने ऐसा न किया बल्कि फ़रमान को अपने महल में सुना।

यह इस बातकी बाट देख रहा था कि तुर्कोंके विरुद्ध लड़ाई करने का मौक़ा मिले। १८६२ ई. में एकबार तुर्की फ़ौजने बिल्ग्रेड पर हमला किया और तुर्की सेनापतिने शहर पर गोले बरसाये। यह तुर्कोंके विरुद्ध लड़नेका मौक़ा ढूढ ही रहा था। इसने तुरंत तुर्की सिपाहियोंके ज़ुल्मके बारेमें क़ुस्तुन्-तुनिया को लिखा। इस बातकी ताईद अन्यान्य राजदूतोंने

भी की। इधर इसकी प्रजाने इसे सलाह दी कि मांटिनिग्रो-वालोंसे मिलकर तुर्कों पर चढ़ाई कर देनी चाहिये। मांटिनिग्रो-वाले तुर्कोंके विरुद्ध थे ही। इसने तुर्कों पर हमला करना चाहा परन्तु योरपकी दूसरी सलतनतोंने बीचमें पड़ कर सुला करनेका इन्तिज़ाम किया। इसने इस शर्तपर सुला करनी चाही कि तुर्की फ़ौजें सर्वियाके क़िलोंमें न रक्खी जांय। कांफ्रेंसने यह तजवीज़ की कि जो मुसलमान प्रजा सर्वियाको छोड़-कर जावे और उसका मालमत्ता पीछे रह जाय उसकी एवज़ सर्वियाके प्रिंसको रुपये देने होंगे। इस बातको इसने मान लिया। मेकाइल की स्त्रीका नाम जूलिया था। इस स्त्रीने इंग्लें-डमें सर्वियाकी ओर सहानुभूति पैदा करनेमें बड़ी सफलता पाई थी। इससे प्रिंसको यह ख़ियाल था कि इंग्लेंड मेरा मदद-गार बन जायगा।

१८६५ ई. में इसने एक बहुत बड़ा जल्सा किया। यह जल्सा पचास वर्षके बाद उन तारीख़ोंमें किया गया था जब इसका बाप तुर्कोंके विरुद्ध युद्ध पर आमादा हुआ था। इसने अपनी सेनाको ठीक हालतमें देखकर सुलतानको इत्तिला दी कि सर्वियाके क़िलोंसे तुर्की फ़ौजें उठाली जांय। यह दरखास्त इस ख़ूबीसे की गई कि सुलतान अप्रसन्न न हुआ। चूंकि इस ज़माने-में करेटमें झगड़ा मचा हुआ था इससे सुलतानने सर्विया वालोंको नाख़ुश करना न चाहा। इस दरख़ास्तकी ताईद आस्टरिया और

इंग्लेंडने भी की। इसलिये मुलतानने बड़ी अच्छी तरह अपनी फ़ौज सर्वियासे हटाली। सिर्फ़ यह एक शर्तकी कि त्यौहारोंके मौक़ोंपर सर्वियाके क़िलोंपर मुलतानका झंडा उड़ा करे।

इस समय वास्तवमें सर्विया स्वतन्त्र हुआ। बिल्ग्रेडका क़िला भी जिसपर बीसियों झगड़े हुएथे—इसके हाथ आगया। अब सर्विया की मातहती का केवल एक निशान बाक़ी रहगया। अर्थात् ख़िराज देना परन्तु अफ़सोसकी बात है कि इस निशानके मिटनेक पहिले ही यह लायक़ प्रिंस एक ख़ूनीके हाथसे मारा गया।

जबसे यह गद्दीपर बैठाथा तभीसे लोग इसके विरुद्ध थे। इसकी भलाइयोंने भी इस मामलेमें मदद दी क्योंकि इसने कारा-जार्ज की पार्टीके लोगोंको कोई अयोग्य तकलीफ़ न दी और उन्हें उनकी जगहपर बदस्तूर क़ायम रक्खा। इसका परिणाम यह हुआ कि इसकी पार्टीके मनुष्य इसके विरुद्ध हो गये और कारा जार्जकी पार्टीके तो विरुद्ध थे ही। वे इसकी मिहरबानि-योंसे कब इसके ख़ैर-ख़ा हो सकते थे। इस मेकाइलका सदा यह ख़ियाल रहा करता था कि सर्विया एक छोटा सा देश है। यदि यह बड़ा होना चाहता है तो इसे अपने सब घरेलू झगड़ों को दूर कर डालना चाहिये। इधर एलकझेंडर जो देशनिकाला पागया था सर्वियाकी गद्दीका दावेदार बन गया और उसके आदमियोंने सर्वियाके लोगोंपर यह असर डाला कि मेकाइल

अच्छा आदमी नहीं है, इसके काम सर्वियाको नुक़सान पहुंचाने वाले होते हैं । आख़िरकार १८६४ में इस गिरोहने प्रिंसको मार डालनेकी कोशिश की परन्तु यह बात ज़ाहिर हो गई। परन्तु हाकिमोंने इन षड्यंत्र कारियोंको कुछ भी सज़ा न दी। इसका यह नतीजा हुआ कि यह प्रिंस १० जून १८६८ को अपने बाग़में बिल्ग्रेडके बिल्कुल पास चार आदमियोंके हाथसे मारा गया। इन निर्दयोंने गोली मारनेके बाद ४० जख़्म छुरियोंके भी लगाये । इन लोगोंका इरादा था कि प्रिंसको मारे बाद बिल्ग्रेडमें जाकर एलकझेंडरके लड़के पीटर काराजार्जविचको बादशाह बनादें और इसका फ़रमान भी बिल्कुल तैयार था। एक फ़िहरिस्त भी बन गई थी जिसमें नये बड़े बड़े उहदेदारोंके नाम दर्जथे जो मुक़र्रर किये जायेंगे और जो अफ़सर इस हुक्मको न मानेंगे फ़ौरन् गोलीसे मार दिये जांयगे परन्तु इत्तिफ़ाक की बात है कि इनचारों ख़ूनियोंके बिल्ग्रेडमें पहुंचनेके पहले ही प्रिंसके ख़ून की इत्तिला वहांपर पहुंच गई थी। इस इत्तिलाके पहुंचते ही बुद्धिमान युद्धमंत्री सब बातोंको समझ गया और बिल्ग्रेडका सारा कामकाज उसने अपने हाथमें ले लिया। यह मंत्री क़त्ल हुए प्रिंसके बड़ेही भरोसेका सलाहकार था ।

इस ख़ूनके विषयमें इतिहास कारोंका ख़ियाल है कि इसमें गद्दीसे ख़ारिज किया हुआ एलकझेंडर और उसका लड़का

पीटर; शरीक थे। इस वाक़ेके बाद सर्वियाकी पार्लियामेंटने क़ानून पास कर दिया कि काराजार्जके ख़ानदानमेंसे किसीको सर्वियाकी गद्दी न मिले। मिलोशकी साज़िशसे पहले काराजार्ज मारा गया था इस वक़्त काराजार्जकी सन्तान की साज़िशसे मिलोश का लड़का मारा गया।

पार्लियामेंटने चौथे मीलां ओब्रेविचको अपना बादशाह बनाया जो मृत प्रिंसका रिश्तेमें भाईथा। इस वक़्त इसकी अवस्था १४ वर्षकी भी न थी। इस लिये राज्यका काम कौंसिल (Council of Regency)के हाथमें सौंपा गया।

सच्च बात तो यह है कि मैकाइलके मारे जानेसे सर्वियाको बड़ा नुक़सान पहुंचा। इस प्रिंस (४ थे मीलां)की तालीम पैरिसमें हुईथी। इसका रहन सहन फ्रांसिसों का सा था। इसमें कुछ सन्देह नहीं है कि यह बड़ाही होशियार था परंतु थोड़ेसे ऐब भी थे जिनकी वजहसे इसकी योग्यता प्रकट न हो सकी। यह युद्धके बिल्कुल विरुद्ध था। परन्तु १८७५ में इसे अपनी इच्छाके विरुद्ध तुर्कोंके मुक़ाबलेमें हरजेगोदेना वालोंकी सहायता करनी पड़ी।

२० जून १८७६ को यह मांटिनिग्रोका हामी होकर तुर्कोंके विरुद्ध लड़ने लगा। उस वक़्त सर्वियाकी सेना एक रूसी सेनापति की मातहतीमें थी। थोड़े ही दिनोमें यह बात प्रकट होगई कि सर्वियाकी सेना मांटिनिग्रोकी सेनाकी तुलनामें

कुछ नहीं है और तुर्कोंका साह्मना तो कर ही नहीं सकती। रूसी सेनापति की चतुराईसे यह सेना कुछ समय सफलता पाती रही परन्तु यह चतुराई शस्त्रोंका कबतक मुक़ाबला कर सकती थी। आख़िरकार तुर्क सर्वियामें दाख़िल होगये और एक भारी युद्ध हुआ जिसमें प्रिंस मीलांकी सेना हारी। इसके बाद सुलतानने सर्वियासे बड़ी कड़ी शर्तें करना चाहा परन्तु इत्ति-फ़ाक ऐसा हुआ कि इसी ज़मानेमें रूसने तर्कीके साथ युद्धकी घोषणा कर दी। इसके कारण सुलतानने सर्वियाको छोड़ दिया। उसने न सर्वियाका कोई प्रान्त लिया और न युद्धका ख़र्च वसूल किया।

इसके बाद सर्वियाके प्रिंस और तर्कीके सुलतानके बीच बहु-तसे झगड़ फ़साद होते रहे। जिनकी वजहसे सर्वियाको मुल्कका बहुत बड़ा हिस्सा मिल गया और १८७८ में सर्विया सर्वथा स्वतन्त्र करदिया गया। आख़िरकार १८८२ में यह प्रथम मीलांके नामसे सर्वियाका सुलतान (King) मुक़र्रर हो गया।

बर्लिनके सन्धिपत्रके बाद यह ख़ियाल किया गया था कि बल्कानके राज्योंका अच्छा इंतिज़ाम होगया है परन्तु इस इंति-ज़ामसे न सर्विया ख़ुश था और न बलगेरिया। ये दोनों देश आपसमें झगड़ते रहे। अर्थात् जो देश सर्वियाको मिलगया उसे बलगेरिया वाले चाहते थे और जो बलगेरियाके क़ब्जेमें था

उसपर सर्वियावालोंका दांव था। आखिरकार सर्विया और बलगेरियामें जंग छिड़ गई। अगर आस्टरियाका संचालक ठीक समयपर सर्वियाकी सहायता न करता तो बलगेरिया वालोंने सर्वियामें अपना झंडा गाड़दिया होता और युद्धका खर्च भी वसूल किया होता।

इस युद्धका सर्वियाके लोगोंपर बहुत बुरा असर हुआ। वे लोग बहुत अप्रसन्न हुए और किंग मीलांके विरुद्ध होगये। यहांतक कि एक फ़ौजी अफ़सरकी विधवाने बिलग्रेडके गिरजा घरमें उसपर गोली चलाई।

सर्वियामें अब एक समुदाय पिटर काराजार्ज विचका हामी पैदा होगया जिसका यह इरादा था कि मौजूदा बादशाहको गद्दीसे हटाकर पिटर कारा जार्ज विचको बादशाह बनादे। इन झगड़ोंके साथ खानदानी झगड़ा भी शुरू होगया। इसका कारण यह था कि मीलांने एक रूसी खूबसूरत स्त्रीके साथ विवाह करलिया था जिसका नाम महारानी नेटालीई (Queen Natalie) था। इन दोनों स्त्रीपुरुषोंके मत कभी एक नहीं हुए। क्योंकि रानी रूसको ज़्यादा पसन्द करती थी और राजा आस्टरियाको।

आखिरकार इस नाइत्तिफ़ाक़ीका यह परिणाम निकला कि बादशाहने बीबीको छोड़दिया और राजकाजमें प्रजाको ज़्यादा हाथ डालनेकी इजाज़त दे दी और उसे विशेष स्वाधीनता भी

दी । परन्तु इन झगड़ोंके कारण बादशाहका स्वास्थ्य बिगड़ गया । १८८९ में उसने अपने लड़के एलकझेंडरको बादशाह बनादिया और स्वयं गद्दीसे अलग होगया । इस समय एलकझेंडरकी अवस्था केवल १३ वर्षकी थी इस लिए एक कौंसिल (Council of Regency) मुक़र्ररकी गई । रेजेंसीके ज़मानेके ये ४ वर्ष बहुत ख़राबथे क्योंकि छोड़ी हुई रानी सर्वियामें रहने लगी थी और उससे वहांके आदमी बहुत ख़ुश थे। गद्दी छोड़कर अलहदा होनेवाले बादशाह और छोड़ी हुई रानीको यह मालूम हुआ कि अगर हम दोनों आपसमें मेल न करलेंगे तो हमारे लड़केकी गद्दी ख़तरेमें पड़जायगी, तो ये दोनों आपसमें समझ गये। इधर एलकझेंडर जवान होगया । १३ अप्रेल १८९३ में इसने अपने साथ महलमें खाना खाते हुए मंत्रियोंको क़ैद करलिया और दूसरेही दिन फ़रमान निकाला कि अब मैं बालिग़ होकर राजका काम करने योग्य होगया हूं ।

१८९४ में इसने वह हुक्म ख़ारिज करदिया कि जिसमें पांच वर्ष पहिले पार्लियामेंट स्थापित करनेका वादा किया था और वह क़ानून जारी करदिया जो १८६९ में जारी था । लोगोंको इस बादशाहकी योग्यताका बड़ा भरोसा था । वे समझने लगे थे कि शायद इसके ज़मानेमें सर्विया फिर उसी इज्ज़तपर पहुंच जावे जिसपर स्टीफ़न डूशन (Stephen Dushan)के

ज़मानेमें पहुंचा हुआ था। परन्तु १९०० में जब इसने अपनी शादी मूइक ड्रगा मेशीनकें साथ करली तो लोगोंके वे विचार जाते रहे। यह स्त्री एलकझेंडर बादशाहकी मांके पास रहा करती थी। इस विवाहके बाद इसके विचार रूसकी ओर बहुत झुक गये यहां तक कि इसने अपने बाप मीलांको सर्वियामें रहनेकी नाही कर दी। सारे सरकारी कामोंमें यह रूसका अनुकरण करने लगा यद्यपि इसने १९०१ में अंग्रेज़ी ढंगकी पार्लियामेंट मुक़र्रर की और प्रजाके अधिकार भी बढ़ाये परन्तु लोग इसके विवाहसे बड़े ही अप्रसन्न थे। प्रेसकी स्वतन्त्रता होनेके कारण इसपर और इसकी स्त्रीपर बुरे आक्रमण होने लगे। लोगोंको यह सुनकर और भी अप्रसन्नता हुई कि यह अपने सालेको अमना जा-नशीन बनाना चाहता है। १९०२में सर्वियाके हाल ऐसे पैचीदा होगये कि प्रजा और फ़ौज बादशाहसे आम तोरपर विरुद्ध होगये। रूस और आस्टरियाने भी कोई ख़बर न ली। इससे प्रजाकी हिम्मत और भी बढ़गई। इधर प्रजा और फ़ौजकी यह दशा थी और उधर, राजा, रानीको छोड़ना चाहता था। वह इस बातकी प्रतीक्षा कर रहा था कि रानी आस्टरिया जावे तो उसे यह अपने इरादेकी सूचना कर दे। वह १५ जून १९१३ को जाना चाहती थी। परन्तु वह दिन आने भी न पाया कि ११ जून १९०३ को फ़ौजने महल को घेर लिया और दोनों राजारानीको निर्दयताके साथ मार डाला।

इन दोनोंके मारे जानेके बाद सर्वियाकी पार्लियामेंट इकट्ठी हुई और इसने १८८९ में जो क़ानून चला था फिर जारी कर दिया और पिटर कारा जार्ज विचको अपना बादशाह बना लिया। यह २४ जून १९०३ को बादशाह की हैसियत-से बिलग्रेड में दाख़िल हुआ। यही बादशाह आज कल राज करहा है और आस्टरियाकी दी हुई तकलीफ़ों को बड़ी हिम्मत और जवां-मर्दी से भुगत रहा है। इसका जन्म १८-४४ में हुआ था। यह एलकझेंडर कारा जार्ज विचका लड़का और कारा जार्ज विचका नवासा है। इसका विवाह मांटेनिग्रोकी राजकुमारी से हुआ है। शुरू शुरू में इसके हुक्मों की ज़्यादा अताअ़त न हुई और राज्यकी बड़ी बड़ी जगह उन लोगोंके हाथमें रहीं जो किंग एलकझेंडर और उसकी रानीके मारे जानेमें शामिल थे। जब यह बादशाह बनाया गया तब सिर्फ़ आस्टरिया हंगरी रूस और मांटेनिग्रोने इसे मुबारक-बाद दी। परंतु योरपके राज्योंने अपनी अप्रसन्नता प्रकट करनेके लिये १९०३ के दिसम्बरमें अपने राजदूतोंको वापस बुलवा लिया। सितम्बर १९०४ को जब यह गद्दीपर बैठा तब इंग्लेंडकी गवर्नमेंटके सिवाय योरपके सारे राज्योंके राजदूत वहांपर मौजूद थे। इग्लेंड सर्वियापर इस वजहसे अप्रसन्न थी कि वहां वालोंने अपने बादशाहको निर्दयतासे मार डाला। उसे इस बातपर और भी क्रोध चढ़ा कि राजहत्यारोंको सज़ा देनेकी जगह बड़े बड़े पदोंपर चढ़ा रक्खा है।

चूंकि आस्टरिया हंगरीपर ही सर्वियाके व्यापारका दारोमदार था क्योंकि सार्वियाके नज़दीक यही एक बड़ा राज था। परन्तु बलगेरियाके साथ ऐसे अहदो-पैमान होगये कि सर्विया अपनी पैदावारको बलगेरियामें होकर काले समुद्र (Black sea) के बन्दरगाहोंपर भेजने लगा। सर्वियाकी पैदावार आस्टरिया-मेंही खप जाती थी—आस्टरियाको मालकी ज़रूरत थी, वह इस काररवाईसे बहुत अप्रसन्न हुई।

अब मैं आपको थोड़ासा हाल बोसेनिया और हरज़ेगोदे-नाका सुनाकर बतलाऊंगा कि आस्टरिया हंगरी कितने दिनसे सर्वियापर ख़ार खाये बैठे थी। यह बात मैं पहिले ही बतला चुका हूं कि ये दोनो इलाक़े कभी सर्वियाके हातमें रहे, कभी तुर्कोंकी मातहतीमें रहे और कभी इन्हें आस्टरिया हंगरीकी आधीनता भोगनी पडी।

१९०८ के पहले ये इलाक़े सर्वियाके थे परन्तु १९०८ में इन्हें आस्टरिया हंगेरीने छीन लिया और अपने राज्यमें मिला लिया। इससे सर्वियाके लोग बहुत बिगड़े। मांटेनिग्रोने भी इस विषयमें सर्वियासे हमदर्दी ज़ाहिर की। सारी सर्वियाकी जाति आस्टरिया हंगरीसे युद्ध करनेको तैयार होगई परन्तु योरपकी अन्यान्य शक्तियोंने सर्वियाको यही सम्मति दी कि अमन क़ायम रखनेकी काररवाई करनी चाहिये। परन्तु सर्विया अपने नुक़-सानका मावज़ा आस्टरियासे चाहता रहा। उसने चाहा कि इन दोनों इलाक़ोंकी एवज़में आस्टरिया हमें ईडरियाटिक समुद्रके किनारेपर कुछ इलाक़े देदे परन्तु आस्टरिया हंगरी और तुर्कीने

इस बातको मंजूर नहीं किया । १९०९ में सर्वियावालोंने चाहा कि आस्टरिया हंगरीके साथ युद्ध होजाय परन्तु उसवक्त रूसने यह राय दी कि आस्टरिया हंगरीसे कुछ न मांगकर बाल्कनका इन्तिज़ाम योरपकी और शक्तियोंके हाथमें छोड़ देना चाहिये। इग्लेंडकी भी यही राय हुई जिसे सर्वियाने मंजूर कर लिया ।

आस्टरिया हंगरीने यह प्रसिद्ध कर दिया कि वह भी अब सर्वियाके साथ शत्रुताका विचार न रक्खेगी परन्तु सर्वियाके लोग आस्टरिया हंगरीसे इतने विरुद्ध थे कि सर्वियाका युवराज प्रिंस जार्ज आम जलसोंमें आस्टरिया हंगरीके विरुद्ध बातें करने लगा। इसका परिणाम यह हुआ कि उसे युवराजपनेसे हाथ धोना पड़ा और उसकी जगह उसका छोटा भाई २७ मार्च १९०९ को युवराज मुक़र्रर किया गया।

१९१२ में सर्वियाका रक़बा १८,७५७ मील मुरब्बा था परन्तु १९१३ में बलगेरिया, ग्रीस, सर्विया और मांटेनिग्रोने मिलकर तुर्कीसे लड़ाई की। इसमें तुर्कीका बहुतसा हिस्सा छीन लिया। इस लड़ाईके ज्यादा हाल सुनानेकी ज़ुरूरत नहीं है क्योंकि यह वाक़ा नया ही है। इसी सालके अगस्त महीनेमें इन चारों राज्योंमें हिस्से बटनेके कारण झगड़ा होगया परन्तु थोड़ेही सप्ताहोंमें यह मामला तै होगया।

इसके बाद सर्विया और आस्टरिया हंगरीमें अल्बानियाकी सरहदके बारेमें फ़साद होगया। ग़रज़ इन तमाम झगड़ोंका यह

नतीजा हुआ कि १९१४ ई. में सर्वियाका रक़बा ३४,००० मील मुरब्बा होगया और ५०,००,००० पचास लाखकी आबादी इसकी हुकूमतमें आगई ।

इसी सर्वियामें जहां एक हज़ारसे भी ज्यादा वर्षोंसे झगड़े फ़साद होते रहे हैं जून १९१४ में फिर एक ऐसा ज़बर्दस्त युद्ध प्रारम्भ होगया जिसकी नज़ीर इतिहासमें नहीं मिल सकती। इस युद्धका कुछ हाल और सर्वियाके बादशाहकी स्पीच जो उसने सर्वियाके बाशन्दोंको दी है सुनाकर मैं अपने मज़मूनको पूरा करूंगा ।

आप इस बातको जानते हैं कि जर्मनी और आस्टरिया हंगरी मिलकर हमारे और हमारे मित्रोंके विरुद्ध युद्ध कर रहे हैं । इन हमारे शत्रुओंने सबसे पहले बेलजियम और सर्वियापर हमले किये । बेलजियम एक छोटासा देश है । यद्यपि वह युद्धके लिये तैयार नहीं था तथापि किंग एल्बर्ट और उसकी बहादुर सेनाने इस मर्दमीके साथ शत्रुका साम्हना किया कि जर्मन एम्पररके सारे मंसूबे धूलमें मिला दिये । इन बहादुरोंने दुश्मनकी असंख्य सेनाको इतने दिनतक रोके रक्खा कि फ्रांस तैयार होगया और इंग्लेंड व हिन्दुस्तानकी वीर सेनायें युद्ध-भूमिमें जा पहुंचीं। इसी तरह सर्वियाकी युद्धप्रिय जातिने आस्टरिया हंगरीकी ५,००,००० पांच लाख सेनाका मुक़ाबला किया । युद्ध प्रारम्भ होनेके बाद ही या यों कहिये कि जब आस्टरिया

वालोंने सर्वियापर हमला किया उस वक़्त आस्टरियाकी फ़ौजने सर्विया पर जो ज़्यादतियां की हैं वे बहुत ज़्यादा हैं । मेरे मज़मूनका इन बातोंसे सम्बन्ध नहीं होनेसे मैं उन्हें छोड़े देताहूं परन्तु इतना कहे बिना नहीं रह सकता कि आस्टरियाकी फ़ौजने मामूली प्रजामेंसे बच्चों, स्त्रियों और वृद्धोंको बेहद दुख दिये और फिर मारडाला । इन्होंने उन बेचारोंको ऐसी ऐसी तकलीफ़ें दी हैं कि जिनका आप ख़ियाल भी नहीं करसकते । जैसेः नाक-कान काटलेना, आखें निकाललेना, स्त्रियोंको बेइज़्ज़त करना, लोगोंको ज़िन्देही जलादेना वग़ैरा वग़ैरा ।

गत अक्तूबर और नवंबरमें आस्टरियावाले सर्वियामें अच्छीतरह दाख़िल होगये थे क्योंकि सर्वियाकी फ़ौजके पास गोलेबारीका उतना सामान मौजूद नहीं था जितनेकी ज़ुरूरत थी । परन्तु नवंबरके अख़ीरमें जब उनके पास अन्यत्रसे सामान आगया तो एका एक इस ज़ोरसे आस्टरियावालोंपर हमला किया कि १२ दिसम्बरको आस्टरियाका एक भी आदमी सर्वियामें न रहा । आस्टरियाकी सेना इस जल्दीसे भगी और सर्वियाको ख़ाली कर गई कि वह ज़ख़्मी सिपाही और युद्धके सामानको भी न ले जा सकी ।

इस युद्धके कारण सर्वियामें खाने-पीनेकी चीज़ोंकी ऐसी कमी आगई कि जो मुश्किलसे ख़ियालमें आ सकती है । परन्तु

आप लोग इन सर्विआके सिपाहियोंकी प्रशंसा करेंगे, जब आपको यह मालूम होगा कि ये वीर योद्धा अपनी ख़ुराकमेंसे उन स्त्रियों और बालकोंको ख़ुराक देते हैं जिनके पास कुछ खानेको नहीं है ।

स्पीच

वीरो ! आपने दो प्रण किये हैं एक मेरे साथ और दूसरा अपने देशके साथ । मैं एक बूढ़ा आदमी हूं और मरनेको बैठा हूं । मैं आपको उस प्रणसे मुक्त करताहूं जो मेरे साथ किया है परन्तु दूसरे प्रणसे आपको कोई नहीं छुड़ा सकता । हां, यदि आपका यह विचार है कि हम युद्ध जारी नहीं रख सकते तो आप अपने घरोंपर जा सकते है और मैं सच्चे तोर पर वादा करताहूं कि यदि मैं इस युद्धमें जय पाकर फिरा तो आपके विरुद्ध किसी शख़्सको कोई काररवाई न करने दूंगा । परन्तु मैं और मेरे बच्चे उसवक़्त तक मैदानको न छोड़ेंगे जब तक कि मौतका ज़बर्दस्त हाथ वहांसे न हटादे ।

समाप्त.